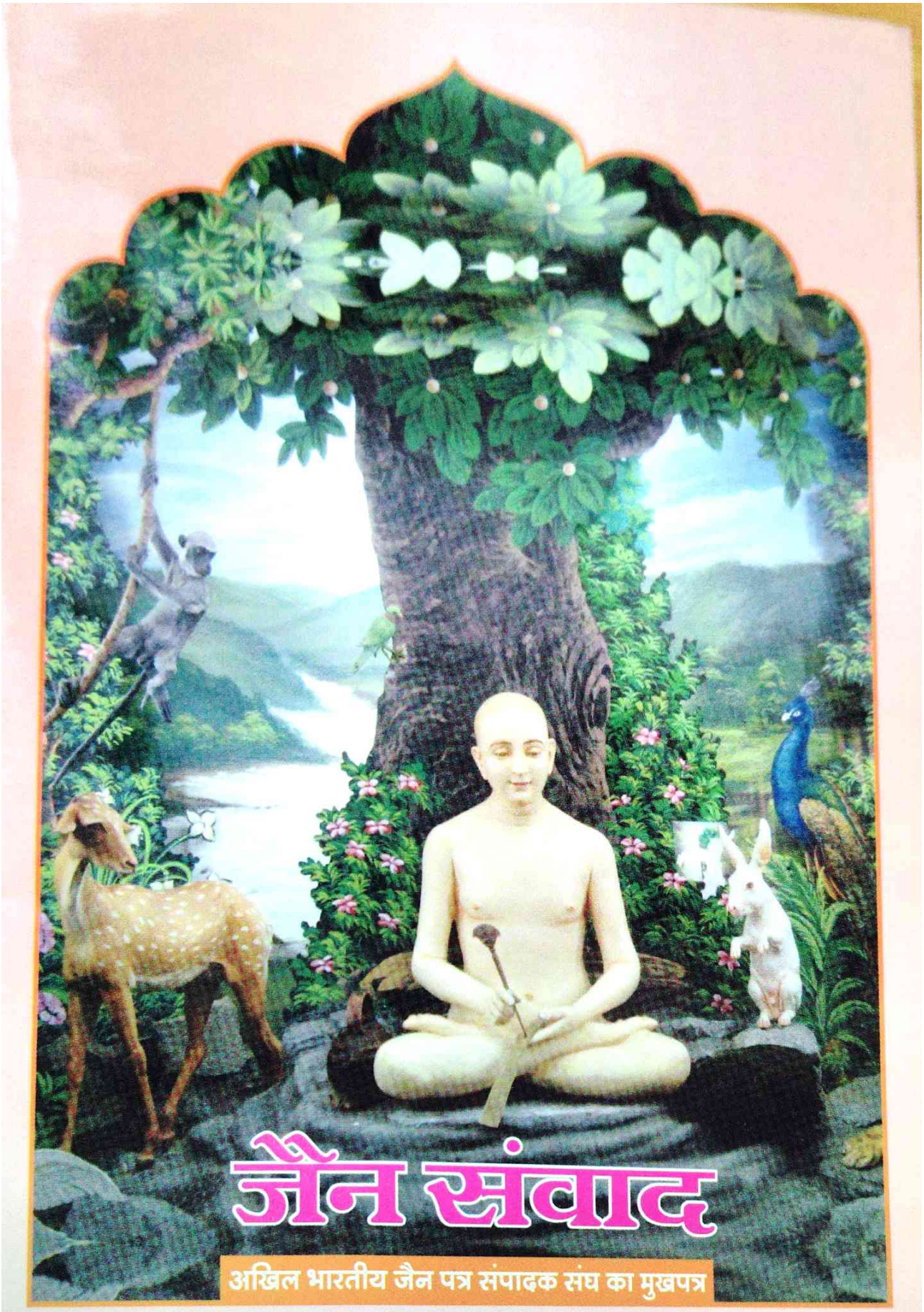

जैन संवाद

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का मुखपत्र

अखिल बंसल द्वारा सम्पादित

जनवरी-मार्च- 2012
मूल्य : ₹ 10/-

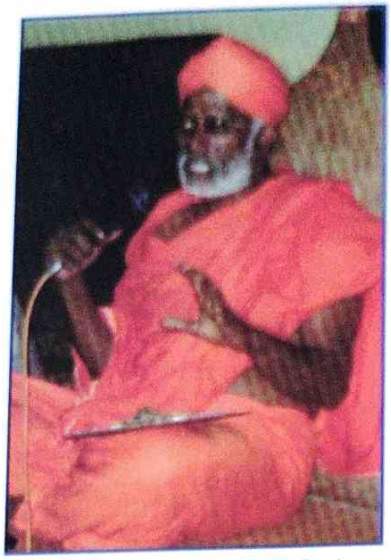

पूज्य भट्टारक श्री धवलकीर्तिजी संवाद के साक्षियों को संबोधित करते हुए।

श्री आर.के. जैन अपने विचार व्यक्त करते हुए।

मुख्य अतिथि श्री सी. कृष्णन का उद्‌बोधन।

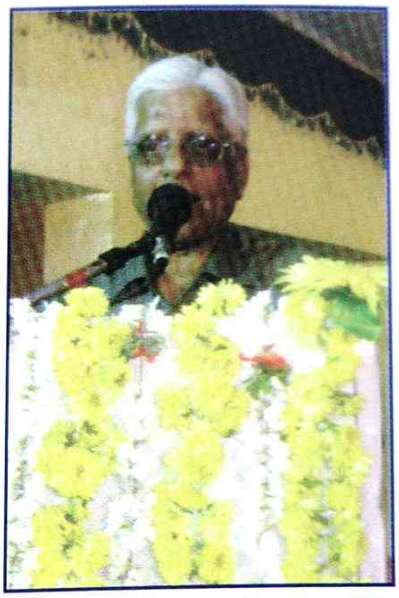

सह संयोजक श्री अनूप चंद जी एडवोकेट विचार व्यक्त करते हुए।

जैन संवाद का अवलोकन करते हुए श्रीमती सरिता जैन।

तमिलनाडु संवाद-11 चित्रों में

जैन-संवाद

अंक – द्वितीय

जनवरी से मार्च – 2012

प्रधान सम्पादक :

अखिल जैन 'बंसल'

सम्पादक मण्डल :

डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

डॉ. नरेन्द्रकुमार 'भारती', सनावद

अनूपचन्द जैन एडवोकेट, फिरोजाबाद

प्रकाशक :

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ

129, जादोन नगर–बी, दुर्गापुरा, जयपुर–302018

फोन : 0141–2722274, मो. 07737241003

E-mail : info@jainsampadaksangh.org

website : www.jainsampadaksangh.org

अनुक्रमणिका

- पत्रकारिता के क्षेत्र में पहला कदम – अखिल बंसल 3
- लोकतंत्र का प्रहरी–गुलाब कोठारी 5
- बहुत दूरी तय करनी है – नरेन्द्रकुमार जैन 7
- वर्तमान स्थिति में जैन पत्रकार की भूमिका–डॉ. कुमारपाल देसाई 8
- जैन पत्र पत्रिकाओं का उत्तरदायित्व – जे. के. संघवी 10
- जैन पत्रकारिता : कुछ सुधार आवश्यक–महेन्द्र कुमार जैन 11
- सम्पादक निर्मल, उज्ज्वल एवं निर्विवाद समाज रचना में सहभागी बनें–आचार्य जयन्त सेन सूरी 13
- जैन पत्रकारिता : स्थिति, समस्या और सम्भावना–डॉ. नरेन्द्र भानावत 15
- संगठन की सुदृढता का आधार : समर्पण व सौहार्द–डॉ.राजीव प्रचंडिया 20
- संवाद योजना : एक सार्थक पहल – प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन 21
- संवाद 11 और तमिलनाडु की यात्रा – डॉ. प्रेमचंद रांवका 23
- सरिता जैन से अखिल बंसल की सीधी बात 24
- एक मुलाकात ....श्रीमती अनुपमा जैन 25
- जैन संस्कृति का प्रतिनिधि स्थल श्री अरहंतगिरि–राजेन्द्र जैन 'महावीर' 27
- गीत – दिनेश दगड़ा 28
- पाठक संवाद 29
- स्वागत है नये सदस्यों का 31
- समाचार संवाद 32

मुद्रक :

प्रिन्टोमैटिक्स

स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा,
जयपुर – 302018
(0141) 2722274, मो. : 09929655786

सम्पादकीय

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के मुख पत्र जैन सम्वाद का यह द्वितीय अंक आपके हाथों में हैं। सम्पादक संघ से अल्प समय में ही 90 सदस्यों का जुड़ जाना अपने आप में मायने रखता है। इस सम्पादक संघ को यदि जैन समाज की वास्तविक संसद कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि इस संस्था में हर वर्ग, हर विचारधारा तथा हर अखिल भारतीय संस्था से जुड़े सदस्य इसके भी सदस्य हैं। यहां न तो विचारधारा का टकराव है न व्यक्तियों में कोई टकराहट है। सभी को अपनी बात लिखने व कहने का पूरा अधिकार है।

कार्यक्रमों की श्रृंखला में 17 व 18 मार्च को जयपुर में राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित है जो संभवतः जैन पत्रकारिता के इतिहास में पहली बार आयोजित हो रही है, सभी लाभ लें।

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की बेवसाइट wwwjainsampadaksangh.org को नियमित अपडेट किया जा रहा है। इसमें जैन संवाद का नया अंक पढ़ने को मिलेगा साथ ही जैन समाज की महत्वपूर्ण गतिविधियों को News Relise में संग्रहित कर अपडेट किया जाता है जिसे आप क्लिक कर देख सकते हैं तथा चाहें तो कापी कर अपनी पत्र–पत्रिका में प्रकाशनार्थ उपयोग कर सकते हैं। अपनी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी E-mail : info@jainsampadaksangh.org पर डाउनलोड कर संस्था से जुड़े रह सकते हैं।

नया अंक आपको कैसा लगा अपने विचार अवश्य लिखें।

– अखिल बंसल

पत्रकारिता के क्षेत्र में पहला कदम

□ अखिल बंसल
सम्पादक - समन्वय वाणी, जयपुर

समाचार अर्थात् सम + आचार समान भावना के समाचार। समाचार पत्र को दर्पण की संज्ञा दी जाती है। व्यक्ति का नाक-नक्श जैसा होता है, दर्पण में उसका प्रतिबिम्ब वैसा ही दिखाई देता है। समाचार पत्र का सम्पादक भी बिना किसी राग-द्वेष के जनहित में समाचार प्रकाशित करता है। सफल सम्पादक वही है जो व्यक्तिगत कषाय से परे रहकर बिना किसी द्वेष भावना से समाज हित, देशहित व जनहित के समाचार अपनी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कर अपने दायित्व का निर्वहन करता है। ऐसे विशाल व्यक्तित्व के धनी सम्पादक ही सम्मान के पात्र होते हैं।

समाचार को अंग्रेजी में न्यूज (**News**) कहते हैं। यह चारों अक्षर **N** नार्थ, **E** ईस्ट, **W** वेस्ट तथा **S** साउथ अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं की जानकारी या गतिविधियाँ जिसमें हो वह समाचार होता है। समाचार की भाषा सरल, सरस हो तथा किसी को मानसिक कष्ट, घृणा व अराजकता फैलाने वाली नहीं होना चाहिये। लोकतंत्र में पत्रकारिता को चौथा स्तम्भ माना जाता है। इसकी गौरव-गरिमा बनाए रखना हर पत्रकार का दायित्व है। पत्रकार बनना सरल है परन्तु पत्रकारिता के दायित्व का निर्वहन करना कांटों के ताज के सदृश्य है। यदि पत्रकार अपने दायित्व को समझते हुए पूर्ण निष्ठा, निर्भीकता व निष्पक्षता का ध्यान रखकर पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करता है तो वह कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने में सक्षम हो सकता है।

पत्रकारिता का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। हर व्यक्ति पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने को उत्सुक दिखाई देता है। पत्रकार बनना जितना सरल व सुलभ है उसकी जिम्मेदारी का निर्वहन करना कंटकाकीर्ण अर्थात् कांटों भरा ताज है। सर पर कफन बांधकर जो भी इस क्षेत्र में कार्य करना चाहता है उसे सर्वप्रथम मुद्रण तकनीक का प्रारंभिक ज्ञान कर लेना चाहिए। कुछ वर्षों तक किसी समाचार पत्र-पत्रिका से जुड़कर पत्रकारिता का सामान्य ज्ञान प्राप्त करना श्रेयस्कर रहेगा। पत्र-पत्रिका प्रकाशन से पूर्व भारत के समाचार पत्र रजिस्ट्रार कार्यालय से शीर्षक सत्यापन कराकर उसका रजिस्ट्रेशन कराना आवश्यक होता है। बिना रजिस्ट्रेशन के पत्र-पत्रिका निकालना कानूनी अपराध की श्रेणी में आता है।

समाचार पत्र-पत्रिका प्रकाशित करने हेतु जब मानसिक रूप से तैयारी हो जाए तब इच्छुक व्यक्ति अपने जिला मुख्यालय पर जिलाधीश द्वारा अधिकृत अधिकारी के पास जाकर निर्धारित कोर्ट की स्टाम्प के साथ आवेदन करें। यह आवेदन पत्र रजिस्ट्रार न्यूज पेपर फॉर इण्डिया नई दिल्ली के नाम से अग्रेषित की

जाती है। इस आवेदन पत्र में समाचार पत्र शीर्षक के लिए अधिकतम १० नामों की सूची वरिष्ठता क्रम में दी जाती है। इसमें यह भी उल्लेखित किया जाता है कि पत्र-पत्रिका किस भाषा में तथा किस अवधि में प्रकाशित होगी। प्रकाशन स्थल, मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक का नाम भी उक्त प्रपत्र में लिखकर दिया जाता है। आपका आवेदन पत्र प्रेस रजिस्ट्रार के पास नई दिल्ली स्थित कार्यालय को अग्रेषित किया जाता है। यह सारी प्रक्रिया पूर्ण करने के पश्चात् आप इन्टरनेट के माध्यम से अपने शीर्षक सत्यापन की स्थिति जान सकते हैं। प्रेस रजिस्ट्रार के यहां से शीर्षक सत्यापित होकर आने के पश्चात् निर्धारित घोषणा पत्र जिलाधीश कार्यालय में भरकर सक्षम अधिकारी के समक्ष हस्ताक्षर कर प्रत्यक्ष देना पड़ता है। घोषणा पत्र प्रस्तुत करने के उपरान्त स्वीकृत शीर्षक के नाम से निर्धारित प्रिंटिंग प्रेस पर आप अपनी पत्र-पत्रिका मुद्रित करा सकते हैं। ध्यान रहे घोषणा पत्र में दी गई जानकारी में यदि कोई भी परिवर्तन होता है तो नया घोषणा पत्र प्रस्तुत करना पड़ता है।

मुद्रित समाचार पत्र की एक प्रति रजिस्ट्रार न्यूज़ पेपर ऑफ इण्डिया पश्चिम खण्ड-८, विंग २ रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली को अवश्य भेजना चाहिए। इसके साथ ही जिला कलेक्टर प्रवर अधीक्षक डाकघर, डी.आई.जी., सी.आई.डी. जिला पुलिस अधीक्षक, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक, जिला सूचना जनसम्पर्क अधिकारी आदि को निःशुल्क भेजना चाहिए।

रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र (RNI) प्राप्त करने की विधि -

जब समाचार-पत्र पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित हो जाता है तब प्रथम अंक की प्रति, घोषणा पत्र की प्रति, शीर्षक सत्यापन की प्रति संलग्न कर रजिस्ट्रेशन हेतु रजिस्ट्रार न्यूज पेपर ऑफ इण्डिया के नाम आवेदन भेजकर रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र प्राप्त करना चाहिए। इस रजिस्ट्रेशन नम्बर को समाचार पत्र-पत्रिकाओं में मुद्रित करना अनिवार्य है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन प्राप्त करना -

रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र प्राप्त होने के पश्चात् उसकी फोटो प्रति के साथ ५० ग्राहकों की सूची संलग्न कर नए अंक साथ प्रवर अधीक्षक डाकघर को पोस्टल रजिस्ट्रेशन हेतु आवेदन भेजना चाहिए। पोस्टल रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर रियायती दरों पर पत्र पत्रिका निर्धारित डाकघर में पोस्ट करने की सुविधा प्राप्त हो जाती है। पोस्टल रजिस्ट्रेशन नम्बर को समाचार पत्र-पत्रिका के अन्तिम पृष्ठ पर मुद्रित करना अनिवार्य है। वर्तमान में ५० ग्राम तक वजन वाली पत्र-पत्रिका २५ पैसे के डाक टिकिट लगाकर पोस्ट करने की सुविधा उपलब्ध है। पोस्टल रजिस्ट्रेशन हर तीन वर्ष में रिन्यू कराया जाता है।

रजिस्ट्रार न्यूज पेपर ऑफ इण्डिया को प्रतिवर्ष मार्च के माह में वार्षिक रिटर्न निर्धारित प्रपत्र में भरकर भेजना पड़ती है। यह आवश्यक प्रक्रिया है।

लोकतंत्र का प्रहरी

☐ गुलाब कोठारी

पत्रकार एक इतिहासकार भी होता है। साहित्यकार और कवि क्रान्त द्रष्टाद्ध भी होता है। उसका काम है अतीत पर आंख रखते हुए वर्तमान का आंकलन और भविष्य पर लेखन। समाज में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या और समाज में स्वयं के प्रति विश्वास बनाए रखने का उत्तरदायित्व। उसके बिना पत्रकार के शब्दों की सार्थकता नहीं होती। न किसी के दिल को छू सकते हैं, न कोई इनका अनुकरण ही करेगा। नौकरी करने वाले पत्रकारों की तरह जिनको न साख की चिन्ता, न ही पाठक के साथ भावनात्मक जुड़ाव की। उसे पेट भरने के लिए ६ घंटे काम करना है। ईमानदारी से। इस दृष्टि से राजस्थान पत्रिका ने भावनात्मक सम्प्रेषण के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जो कुछ कहना है, उसमें विवेक के साथ-साथ भावना भी हो। लोकहित का भाव तब सीधा मन के धरातल तक पहुंच जाता है। रास्ते में बुद्धि कोई प्रश्न या तर्क खड़ा नहीं करती। संदेश ग्राह्य हो जाता है। इसीलिये हम कहते भी हैं कि पत्रिका आत्मिक धरातल का समाचार-पत्र है। लोग इसका अनुसरण करते हैं। जैसे कभी धार्मिक ग्रन्थों का पारायण होता था। पत्रिका के समाजिक सरोकार इसका उदाहरण हैं। राजस्थान के गुर्जर आन्दोलन, भोपाल का किसान आन्दोलन अथवा भोपाल के ही बड़े तालाब की जन-श्रमदान के द्वारा की गई खुदाई आदि पाठकों के विश्वास के अनुपम उदाहरण हैं। हमारे सामाजिक सरोकार हमें समाज के शुभेच्छु के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

एक अच्छे साहित्यकार की तरह पत्रकार भी शब्द-ब्रम्ह का साधक होता है। स्वर, व्यंजन, छन्द, वर्ण आदि का ज्ञान एवं शरीर में उत्पत्ति स्थान, स्पन्दनों का प्रभाव आदि पर भी उसकी पकड़ मजबूत होती है। शब्दों की मंत्र शक्ति, सम्प्रेषण शक्ति, स्पन्दन शक्ति, नाद का रूप आदि का ज्ञान उसे ऋषि कोटि का स्थान दिला देता है। क्योंकि पत्रकार भी समाज को कुछ देने के लिये लिखता है। आगे की उपलब्धियां और सिद्धियां उसके श्रम एवं तप पर निर्भर करती है। आज मीडिया लेने के पीछे उतावला जान पड़ता है। मूल्यों से समझौता करता है। प्रतिस्पर्धा का वातावरण बन गया है। इस दौड़ में पत्रकार भी श्रमजीवी बन गया है। तब वह स्वयं अपने ही लेखन से कैसे जुड़ेगा? उसका निष्प्राण लेखन उसी का पेट भरकर समाप्त हो जायेगा। अपने लेखन के शब्दों को यह पत्रकार तो कभी नहीं पढ पाएगा या सुन पाएगा। तब एक व्यक्ति अहंकार का मारा, प्राकृत ज्ञान से अनजान, पत्रकार का मुखौटा लगाए, पत्रकार के रूप में समाज में कभी प्रतिष्ठित नहीं होगा। इतिहास लेने वाले को कभी याद नहीं करता। कलम से कागज काले करता, कागज की नाव की तरह समय के साथ बह जायेगा। उसके द्वारा भेजे हजारों संदेशों में से किसी को कुछ याद नहीं रहेगा। पत्रकार के सम्प्रेषण का अर्थ है कि वह भी संदेश के साथ

लोकतंत्र का प्रहरी

☐ गुलाब कोठारी

पत्रकार एक इतिहासकार भी होता है। साहित्यकार और कवि क्रान्त द्रष्टाद्ध भी होता है। उसका काम है अतीत पर आंख रखते हुए वर्तमान का आंकलन और भविष्य पर लेखन। समाज में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या और समाज में स्वयं के प्रति विश्वास बनाए रखने का उत्तरदायित्व। उसके बिना पत्रकार के शब्दों की सार्थकता नहीं होती। न किसी के दिल को छू सकते हैं, न कोई इनका अनुकरण ही करेगा। नौकरी करने वाले पत्रकारों की तरह जिनको न साख की चिन्ता, न ही पाठक के साथ भावनात्मक जुड़ाव की। उसे पेट भरने के लिए ६ घंटे काम करना है। ईमानदारी से। इस दृष्टि से राजस्थान पत्रिका ने भावनात्मक सम्प्रेषण के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जो कुछ कहना है, उसमें विवेक के साथ-साथ भावना भी हो। लोकहित का भाव तब सीधा मन के धरातल तक पहुंच जाता है। रास्ते में बुद्धि कोई प्रश्न या तर्क खड़ा नहीं करती। संदेश ग्राह्य हो जाता है। इसीलिये हम कहते भी हैं कि पत्रिका आत्मिक धरातल का समाचार-पत्र है। लोग इसका अनुसरण करते हैं। जैसे कभी धार्मिक ग्रन्थों का पारायण होता था। पत्रिका के समाजिक सरोकार इसका उदाहरण हैं। राजस्थान के गुर्जर आन्दोलन, भोपाल का किसान आन्दोलन अथवा भोपाल के ही बड़े तालाब की जन-श्रमदान के द्वारा की गई खुदाई आदि पाठकों के विश्वास के अनुपम उदाहरण हैं। हमारे सामाजिक सरोकार हमें समाज के शुभेच्छु के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

एक अच्छे साहित्यकार की तरह पत्रकार भी शब्द-ब्रम्ह का साधक होता है। स्वर, व्यंजन, छन्द, वर्ण आदि का ज्ञान एवं शरीर में उत्पत्ति स्थान, स्पन्दनों का प्रभाव आदि पर भी उसकी पकड़ मजबूत होती है। शब्दों की मंत्र शक्ति, सम्प्रेषण शक्ति, स्पन्दन शक्ति, नाद का रूप आदि का ज्ञान उसे ऋषि कोटि का स्थान दिला देता है। क्योंकि पत्रकार भी समाज को कुछ देने के लिये लिखता है। आगे की उपलब्धियां और सिद्धियां उसके श्रम एवं तप पर निर्भर करती है। आज मीडिया लेने के पीछे उतावला जान पड़ता है। मूल्यों से समझौता करता है। प्रतिस्पर्धा का वातावरण बन गया है। इस दौड़ में पत्रकार भी श्रमजीवी बन गया है। तब वह स्वयं अपने ही लेखन से कैसे जुड़ेगा? उसका निष्प्राण लेखन उसी का पेट भरकर समाप्त हो जायेगा। अपने लेखन के शब्दों को यह पत्रकार तो कभी नहीं पढ पाएगा या सुन पाएगा। तब एक व्यक्ति अहंकार का मारा, प्राकृत ज्ञान से अनजान, पत्रकार का मुखौटा लगाए, पत्रकार के रूप में समाज में कभी प्रतिष्ठित नहीं होगा। इतिहास लेने वाले को कभी याद नहीं करता। कलम से कागज काले करता, कागज की नाव की तरह समय के साथ बह जायेगा। उसके द्वारा भेजे हजारों संदेशों में से किसी को कुछ याद नहीं रहेगा। पत्रकार के सम्प्रेषण का अर्थ है कि वह भी संदेश के साथ

लोकतंत्र का प्रहरी

□ गुलाब कोठारी

पत्रकार एक इतिहासकार भी होता है। साहित्यकार और कवि क्रान्त द्रष्टाद्ध भी होता है। उसका काम है अतीत पर आंख रखते हुए वर्तमान का आंकलन और भविष्य पर लेखन। समाज में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या और समाज में स्वयं के प्रति विश्वास बनाए रखने का उत्तरदायित्व। उसके बिना पत्रकार के शब्दों की सार्थकता नहीं होती। न किसी के दिल को छू सकते हैं, न कोई इनका अनुकरण ही करेगा। नौकरी करने वाले पत्रकारों की तरह जिनको न साख की चिन्ता, न ही पाठक के साथ भावनात्मक जुड़ाव की। उसे पेट भरने के लिए ६ घंटे काम करना है। ईमानदारी से। इस दृष्टि से राजस्थान पत्रिका ने भावनात्मक सम्प्रेषण के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जो कुछ कहना है, उसमें विवेक के साथ-साथ भावना भी हो। लोकहित का भाव तब सीधा मन के धरातल तक पहुंच जाता है। रास्ते में बुद्धि कोई प्रश्न या तर्क खड़ा नहीं करती। संदेश ग्राह्य हो जाता है। इसीलिये हम कहते भी हैं कि पत्रिका आत्मिक धरातल का समाचार-पत्र है। लोग इसका अनुसरण करते हैं। जैसे कभी धार्मिक ग्रन्थों का पारायण होता था। पत्रिका के समाजिक सरोकार इसका उदाहरण हैं। राजस्थान के गुर्जर आन्दोलन, भोपाल का किसान आन्दोलन अथवा भोपाल के ही बड़े तालाब की जन-श्रमदान के द्वारा की गई खुदाई आदि पाठकों के विश्वास के अनुपम उदाहरण हैं। हमारे सामाजिक सरोकार हमें समाज के शुभेच्छु के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

एक अच्छे साहित्यकार की तरह पत्रकार भी शब्द-ब्रम्ह का साधक होता है। स्वर, व्यंजन, छन्द, वर्ण आदि का ज्ञान एवं शरीर में उत्पत्ति स्थान, स्पन्दनों का प्रभाव आदि पर भी उसकी पकड़ मजबूत होती है। शब्दों की मंत्र शक्ति, सम्प्रेषण शक्ति, स्पन्दन शक्ति, नाद का रूप आदि का ज्ञान उसे ऋषि कोटि का स्थान दिला देता है। क्योंकि पत्रकार भी समाज को कुछ देने के लिये लिखता है। आगे की उपलब्धियां और सिद्धियां उसके श्रम एवं तप पर निर्भर करती है। आज मीडिया लेने के पीछे उतावला जान पड़ता है। मूल्यों से समझौता करता है। प्रतिस्पर्धा का वातावरण बन गया है। इस दौड़ में पत्रकार भी श्रमजीवी बन गया है। तब वह स्वयं अपने ही लेखन से कैसे जुड़ेगा? उसका निष्प्राण लेखन उसी का पेट भरकर समाप्त हो जायेगा। अपने लेखन के शब्दों को यह पत्रकार तो कभी नहीं पढ पाएगा या सुन पाएगा। तब एक व्यक्ति अहंकार का मारा, प्राकृत ज्ञान से अनजान, पत्रकार का मुखौटा लगाए, पत्रकार के रूप में समाज में कभी प्रतिष्ठित नहीं होगा। इतिहास लेने वाले को कभी याद नहीं करता। कलम से कागज काले करता, कागज की नाव की तरह समय के साथ बह जायेगा। उसके द्वारा भेजे हजारों संदेशों में से किसी को कुछ याद नहीं रहेगा। पत्रकार के सम्प्रेषण का अर्थ है कि वह भी संदेश के साथ

पाठक तक पहुंचे, स्वयं भी संदेश को निरंतर ग्रहण करता जाए। समय के साथ अपने आवरण हटाता जाए और समाज के आवरण भी दूर करने में सहायक हो। तब जाकर समाज में रूपान्तरण की लहर उठेगी। पत्रकार की मशाल समाज में मिसाल बन जायेगी।

आज देशभर में लोकतंत्र का स्थान स्वच्छन्द तंत्र लेता जा रहा है, जो न केवल चिन्ता का विषय है, अपितु नई पीढ़ी के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। इसका एक ही कारण है। प्रहरी स्वयं पथ भ्रष्ट हो गया। यहां तक कि उसने अपनी सही पहचान छिपाने के लिये चेहरे पर मुखौटा लगा लिया। जनता व लोकतंत्र के तीनों पायों के बीच सेतु का दायित्व निभाने वाला मीडिया स्वयं को 'चौथा पाया' कहने लग गया। सेतु का कार्य छोड़ दिया और स्तंभ का मुखौटा पहन लिया। संविधान माने या न माने, मीडिया ने स्वयं-भू घोषणा कर दी।

जनता और तीनों पायों के बीच का सेतु, लोकतंत्र का प्रहरी, पलायन कर गया। इससे न केवल तीनों स्तंभ निरंकुश हो गए, बल्कि स्वयं मीडिया भी स्तंभ जैसा ही व्यवहार करने लग गया। अतः वह भी जनता से दूर हो गया। For the people का रखवाला of the people के साथ जुड़ गया। शिक्षा ने और नेताओं ने जनता को जो सब्ज बाग दिखाए, उससे जनता निश्चिन्त होकर विश्राम के mode में चली गई। पांच साल में एक बार मतदान करके सो जाती है। इससे by the people की अवधारणा भी मिट्टी में मिल गई। अब मीडिया की आक्रामकता का कारण जनता के मुद्दे नहीं रहे। अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति ही उसका एकमात्र लक्ष्य बनने लगा। तभी तो पेड न्यूज जैसा व्यवहार, ब्लैकमेलिंग से लेकर माफिया की तरह सरकारों तक को धमकियां देने की शिकायतें आम हो गईं। तब मीडिया कैसे तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष कर सकता है ? वह तो स्वयं तंत्र का अंग हो गया। जनता के सामने तीनों स्तंभों के साथ खड़ा हो गया। सत्ता का मद स्तंभ को तो स्वीकार करता है, सेतु को स्वीकार नहीं करता। अतः स्वयं सरकार ही उसकी शत्रु हो जाती है। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ की राज्य सरकारें इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। वे लोकतंत्र में विश्वास नहीं करतीं। निजी हित साधन में कार्यपालिका भी उनके साथ है।

इस परिस्थिति से बाहर निकलना भी आवश्यक है। भावी पीढी के लिए कुछ तो नया आधार देना पड़ेगा। भ्रष्ट लोगों के चंगुल से देश को मुक्त कराना पड़ेगा। यह कार्य केवल और केवल मीडिया ही कर सकता है। इसे लोकतंत्र के पाये के स्थान पर फिर से लोकतंत्र का प्रहरी बनाना पड़ेगा। शेष तीनों स्तंभों की निगरानी करनी पड़ेगी। जनता के बीच जो साख आज गिर रही है, जो व्यापारिक स्वरूप उभरता जा रहा है, उस पर अंकुश लगाना पड़ेगा। अकेला मीडिया ही तीनों स्तंभों को दिशा दे सकता है। देश से भ्रष्टाचार मिटा सकता है। तब यह कार्य कैसे किया जाए और

(शेष पृष्ठ १२ पर...)

बहुत दूरी तय करनी है समाज की पत्र–पत्रिकाओं को

☐ नरेन्द्र कुमार जैन

भारतवर्ष में दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरापंथी आदि विभिन्न वर्गों की जैन पत्र–पत्रिकाएं कार्यरत हैं, जिनमें से वे पत्र–पत्रिकायें जो किसी गुरु, मुनि, संस्था के आशीर्वाद से निकल रही है, उनके प्रिंटिंग, कागज आदि का स्तर उच्च कोटि का है, परन्तु जो पत्र–पत्रिकायें निजी स्वामित्व में अथवा विभिन्न समाज संगठनों व संस्थाओं के मुख–पत्र के रूप में निकल रही हैं, उनकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ये पत्र–पत्रिकाएं एक तरफ तो कागज और प्रिंटिंग की क्वालिटी में यथोचित स्तर को प्राप्त नहीं कर पाती है, वहीं दूसरी ओर समाज बन्धुओं द्वारा वार्षिक शुल्क देने में उदासीनता के कारण आर्थिक संकट से सदैव जूझती रहती हैं। इन कारणों से ये पत्रिकाएं समाज को जो संदेश व सेवा देने के प्रयास करती हैं, उसमें ये उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाती हैं, जितनी की अपेक्षा है।

अब यह चलन में आ गया है कि अधिसंख्य गुरु चाहे वे दिगम्बर हों अथवा श्वेताम्बर, अपनी–अपनी एक पत्रिका अवश्य छपवाना चाहते हैं, जिसके माध्यम से वे समस्त कार्यकमों व गतिविधियों और संदेशों का भरपूर प्रचार–प्रसार करते हैं। कुछ मुनिराज की ओर से पत्रिकाएं इतनी महंगी निकाली जा रही हैं कि वैसे कागज व प्रिंटिंग की कल्पना व्यक्तिगत क्षेत्र की पत्रिकाएं कर ही नहीं सकतीं।

कहने को तो देश में जैन पत्र–पत्रिकाओं के तीन–चार अखिल भारतीय संगठन बने हुये हैं, जो समय–समय पर अपने अधिवेशन, मीटिंग आदि करके पत्र–पत्रिका के क्षेत्र में संगठन के कार्य को आगे बढाने के उद्देश्य को प्रतिपादित करते नजर आते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि ये सभी अब तक ऐसा कोई भी कार्य नहीं कर पाये हैं, जिससे लगे कि इन जैन पत्र–पत्रिकाओं को सुदृढ, स्वावलम्बी, जागरुक बनाने की ओर कदम उठाया जा रहा है। आज भी पत्र–पत्रिकाएं उन समाचारों से ही भरी पड़ी हैं, जिनके द्वारा मंदिर, तीर्थ, मुनिराज, विधान, पंचकल्याणक व अतिशय दिखाने की ही चेष्टा की जाती है। ऐसी सामग्री कम दी जाती है, जो जैन समाज को जागरुक बनाये, आडम्बरों से दूर करने का प्रयास करे और चमत्कार दिखाने वाले समाचारों की गहराई में ले जायें।

अभी हाल ही में श्री सम्मेदशिखरजी में अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ एवं दिल्ली में जैन पत्रकार संघ की मीटिंग हुई है, परन्तु इन मीटिंगों की कार्यवाही से यह नहीं झलकता है कि ये संस्थायें समाज की पत्र–पत्रिकाओं की दशा में सुधार ला पायेंगी और इनकी दिशा को जागरुकता की ओर मोड़ पायेंगी।

सभी पत्र–पत्रिकाएं यथासंभव जागरुक हाथों में ही चल रही हैं। यदि इनको संचालित करने वाले हाथ और उनके विचार इनकी दशा और दिशा के बारे में गहराई से विचार करें तो अवश्य ही इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि जैन पत्र–पत्रिकाओं को अभी बहुत दूरी पार करनी है।

सम्पादक – स्वतंत्र जैन चिन्तन, अजमेर

वर्तमान स्थिति में जैन पत्रकार की भूमिका

□ डॉ. कुमारपाल देसाई

पिछले ३००० वर्षों में लगभग १५००० युद्ध हुए हैं। सभी प्राणियों में अपने जाति-बन्धुओं का सर्वाधिक संहार करने का 'गौरव' मनुष्य जाति को प्राप्त है। अब यदि युद्ध हो तो अणुशस्त्र के फलस्वरूप इस पृथ्वी पर 'न्युक्लियर विंटर' का सर्जन होगा और ऐसा शीतयुग व्याप्त हो जायेगा कि आज के हमारे सूर्य जैसे एक सौ सूर्यदेव भी उसकी ठण्ड को दूर नहीं कर पायेंगे।

इस परिस्थिति में मैक्सिम गॉर्की के जीवन की एक घटना का स्मरण होता है। रूस के गांवों में जाकर गार्की विज्ञान की सिद्धियों के बारे में बातें कर रहे थे। वे कहते थे कि विज्ञान के कारण मनुष्य आकाश में उड़ सकता है। समुद्र के तल में खोजा-खाजी कर सकता है। विशाल खेत वह पलभर में जोत सकता है। एक छोटे-से गांव में मैक्सिम गॉर्की विज्ञान की अद्‌भुत सिद्धि के बारे में प्रवचन दे रहे थे। तब एक वृद्ध पुरुष ने पूछा-"तुमने मनुष्य को आकाश एवं समुद्र के तल तक पहुँचते बताया, पर हमें इस दुनिया में धरतीपर कैसे रहना यह नहीं आता उसका क्या ?

वृद्ध का प्रश्न सही और मार्मिक था। धरती पर मनुष्य को कैसे रहना, यह सीखना यही प्रत्येक धर्म का हार्द है।

आज तो मनुष्य ने विनाशकारी अणुशस्त्रों का सृजन करके भस्मासुर को जागृत किया है। यह भस्मासुर स्वयं मानव जाति को ही स्वाहा कर जाये ऐसा है। स्टारवार्स विश्व को घेरा डालकर बैठे हैं। आने वाले कल तो टेंक, राकेट या बम व्यर्थ हो जायेंगे। विषैली वायु या मानस प्रभावक युद्ध खेले जायेंगें। शस्त्रों के रूप बदलते हैं, पर मनुष्य की हिंसक वृत्ति में तो अधिकाधिक घी होमा जा रहा है। तभी तो मानवजाति आज बुद्ध, महावीर, ईसा या गाँधी की ओर आशा से भरी दृष्टि डाले बैठी है।

ऐसे समय में विख्यात फ्रेंच उपन्यासकार विक्टर ह्युगो के शब्द याद आते हैं, "विश्व की तमाम सेनाओं से एक वस्तु बलवान है और वह है-यथासमय संकल्प।"

महितीविस्फोट के इस युग में और टेलिविजन के प्रभाव के संदर्भ में २१ वीं शताब्दी के जैन पत्रकारत्व का विचार करना होगा। हम जानते हैं कि जैन पत्रकार यानी वह पत्रकार तो है ही, किन्तु इसके साथ ही साथ उसके पास जैन धर्म की अहिंसा और सर्वधर्म समन्वय की भावना, अनेकान्त की विचारधारा एवं मूल्यनिष्ठ जीवन के लिए एक विशिष्ट निजी दृष्टिकोण भी है। अतः जैन पत्रकार का एक विशेष कर्तव्य यह होगा कि विश्व की समस्याओं - प्रश्नों सम्बन्धी वह एक विशिष्ट जैन दृष्टिकोण से सोचता रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि विश्व में प्रवर्तमान हिंसा को दूर करने के लिए वह मानव - हृदय से हिंसा की भावना नेस्तोनाबूद करने को कहेगा। हाल ही में 'पार्लमेन्ट ऑफ द वर्ल्ड रीलीयन्स" में एक ऐसा कार्यक्रम रखा गया कि जिसमें इजरायल और पेलेस्टाइन की सीमा पर बसते बच्चों के लिए

प्राथमिक पाठशाला शुरु करना। यहाँ पढने आते बच्चों को विपक्ष की दृष्टि से सोचते हुए सिखाना। संघर्ष मिटाने की शिक्षा देना और इसप्रकार वर्षों से भीषण युद्ध करते हुए इजरायल और पेलेस्टाइनवासियों के बीच मैत्रीपूर्ण सहअस्तित्व के संस्कारों का सिंचन करना। ऐसी घटनाओं को जैन दृष्टिकोण वाला पत्रकार विशिष्ट तरीके से दर्शायेगा। वह एड्स के दर्दी की बात तो कहेगा ही पर उसके साथ जैनी बताई हुई संयम की भावना की अनिवार्यता का जिक्र भी करेगा।

आज के पत्रकारत्व में ''कमिटेड जर्नलिज्म'' की बात हो रही है। पत्रकार विशेष वाद, विचारधारा या सिद्धांतों से जुड़ा रहता है। जैन पत्रकार तो जैनदर्शन की विशालता से जुड़ा ही होगा। अन्य पत्रकार के बीच वह स्वयं अपने जैन दृष्टिकोण के निराले ढंग द्वारा छा जायेगा। इसप्रकार जैन पत्रकार विश्व के प्रश्नों का विचार करेगा। पर्यावरण का विचार करते समय वह जैन जीवन शैली की ओर दृष्टिपात करेगा। 'तत्त्वार्थसूत्र' में 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' की जो भावना प्रकट हुई है और जैन जीवन शैली में जो पर्यावरण दिखाई पड़ता है उसकी बात करेगा।

एक नारी के गर्भ में रहने वाले बच्चे का हृदय भयंकर क्षतिग्रस्त था। आधुनिक विज्ञान ने नारीवर्ग में स्थित शिशु के हृदय का ऑपरेशन कर एक अद्‌भुत सिद्धि हासिल की। यदि गर्भस्थ शिशु की शल्य-क्रिया न की गयी होती, तो वैज्ञानिकों के कथनानुसार निश्चय ही इस बालक को जीवनभर रोग ग्रस्त रहना पड़ता और अन्त में रुग्ण जीवन व्यतीत करते हुए उसकी अकाल मृत्यु होती। विज्ञान की ऐसी अनेक सिद्धियों की जानकारी एक जैन पत्रकार के लिए आवश्यक है। कम्प्यूटर, रोबोट अथवा इलेक्ट्रॉनिक्स के साधनों से होनेवाली प्रगति का लेखा-जोखा भी रखना होगा। यह इसलिए कि उसे आधुनिक विज्ञान से प्रश्न करना होगा कि वह एक ओर तो हृदय का प्रत्यारोपण कर रहा है और दूसरी ओर मनुष्य-जाति का निर्ममतापूर्ण संहार करने वाले शस्त्रों के ढेर लगाये जा रहा है। ऐसा आखिर किसलिए ? एक ओर मनुष्य के जीर्ण अंगों को बदल कर नये अंग लगाकर मनुष्य को लम्बी उम्र देने की कोशिश और दूसरी ओर समूची मानव जाति को विनष्ट करने वाले शस्त्रों की तैयारी? एक तरफ हम कृत्रिम बुद्धि के असीम विकास की मंजिल तय कर रहे हैं। जैन पत्रकार प्रश्न करेगा कि इस विज्ञान के पास कोई निश्चित दिशा या दृष्टि है भी या नहीं अथवा वैज्ञानिक प्रगति की आपाधापी में मनुष्य स्वयं अपने लक्ष्य से भटक गया है?आने-वाले कल के लिए विज्ञान को ऐसी चुनौती देने वाला कोई विचारशील पत्रकार प्राप्त हो, यह बहुत आवश्यक है।

जैन पत्रकारिता की एक और संभावना पर हम दृष्टिपात करें। धर्म का काम तोड़ना नहीं, जोड़ना है। हमारे धर्म-दर्शन के विश्व-हितकारी तत्त्व इस पत्रकारिता के माध्यम से दुनिया के सामने रखे जा सकेंगे। निश्चित ही इस धर्म में एक ऐसी संवादिता है, जो आधुनिक जीवन की विषमता, वेदना और विफलताओं का निराकरण करती है।

(शेष पृष्ठ १२ पर...)

जैन पत्र-पत्रिकाओं का उत्तरदायित्व

□ जे. के. संघवी

जहाँ तक जैन पत्र-पत्रिकाओं का प्रश्न है उनकी अपनी एक विशिष्ट जिम्मेदारी है। वर्तमान में विशेषकर जब कि मानवीय मूल्यों का निरंतर ह्रास हो रहा है, एक दूसरे के प्रति विश्वास की दीवारें ढह रही है। भौतिकता की आँधी में इन्सान अंधा होकर दौड़ रहा है। उसके जीवन-मूल्य बदल रहे हैं, बदले जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में जैनत्व के संस्कारों का कीर्तिध्वज फहराये रखने का गहन दायित्व जैन पत्रिकाओं द्वारा जैन सम्पादकों/पत्रकारों का हो जाता है, जिसके प्रति हर पल, हर कदम सजग व सावधान रहने की जरूरत है।

जैन पत्र प्रकाशन को १२५ वर्ष की लम्बी अवधि बीत चुकी है। सर्वप्रथम जैन पत्र गुजराती मासिक "जैन दिवाकर" के नाम से श्री छगनलाल उमेदचंद द्वारा सन् १८७५ में अहमदाबाद से प्रकाशित हुआ था और लगभग १० वर्ष चला। इस लम्बे अंतराल में अब तक कई पत्र विविध भाषाओं में प्रकाशित हुए एवं कई बंद भी हो गये। आज हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी आदि विविध भाषाओं में ४०० से अधिक नामों की सूची उपलब्ध है, किन्तु नियमित अथवा आज तक प्रकाशन में करीबन २५० पत्रिकायें होंगी।

अधिकांश जैन पत्र-पत्रिकायें किसी संस्था, सम्प्रदाय अथवा साधु संतों से जुड़ी रही या उनके निर्देशन में प्रकाशित होने से मुख्य रूप से उनके समाचारों के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है। इसके बावजूद भी कुछ पत्रिकाओं ने जैनत्व, अहिंसा आदि उच्च आदर्शों को प्ररुपित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चूंकि जैन पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एक मिशन/ एक उद्देश्य लेकर होता है अतएव उसकी पूर्ति में कठिनाइयों का आना तय है। निर्भीकता/सत्यनिष्ठता से इस डगर पर चलना सम्पादक की कसौटी है। सम्पादक/पत्रकार स्वयं जैनत्व के संस्कारों को यथासंभव जीवन में उतारें/ उसका चारित्र निष्कलंक हो, फिर यदि वह समाज में व्याप्त कुरीतियों या गलत परम्पराओं में सुधार के लिये अपनी कलम चलाता है तो वह निश्चित रूप से उपयोगी होगी। किसी के भी प्रति द्वेषभाव न रखते हुए गलत को गलत संस्कारों की भाषा में कहना, सम्पादक का कर्तव्य/उत्तरदायित्व है। समाज में आयी या लायी जाने वाली विकृतियों को दूर करने के लिए उसे प्रकाश में लाकर समाज हित में समाज के समक्ष रखना सम्पादक का काम है।

समयानुसार वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए पत्र का सम्पादन करना चाहिए। पत्र में ताजा जानकारी के साथ घटित घटनाओं पर निष्पक्षता से विश्लेषण होना चाहिये। विभिन्न समुदायों के साथ एकरूपता का प्रयास करना चाहिये। विवादास्पद एवं मात्र द्वेष से भरी सामग्री का प्रकाशन नहीं करना चाहिए। भगवान के सिद्धांतों का प्रचार/प्रसार दूर देशान्तरों में भी करने का प्रयत्न करना चाहिये। किसी भी प्रकार

(शेष पृष्ठ २६ पर)

जैन पत्रकारिता – कुछ सुधार आवश्यक

☐ महेन्द्र कुमार जैन

जैन समाज में पत्र–पत्रिकाएं निरन्तर बढ रही हैं, यह अच्छी बात है परन्तु समाज को इनसे न तो कोई दिशा निर्देश मिल पा रहा है और न उचित मार्गदर्शन। सम्पादक क्या लिखता है, उसकी लेखन सम्पादन शैली क्या है, पत्रिका का स्वरूप क्या है, धर्म/समाज के अनुरूप उसमें सामग्री प्रकाशित होती है या नहीं, समय पर प्रकाशन होता है या नहीं, पाठकों में प्रेषण अवस्था ठीक है या नहीं आदि ऐसे अनेक सवाल हैं जिनके समाधान की ओर अनेक सम्पादक–प्रकाशक कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं।

दुःख का विषय है कि कुछ ने तो पत्रकारिता को धन कामने का जरिया बना रखा है भले ही पाठकों/समाज को कुछ मिले तो ठीक, न मिले तो ठीक। जैन समाज में सैंकड़ों की तादाद में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है जिनमें से कुछ को छोड़कर अधिकांश की दशा बड़ी खराब चल रही है। कोई अनियमितता का शिकार है, कोई मात्र धनवान/मुनियों की ही बनकर, समाज को भ्रमित कर उनका शोषण कर रही हैं। कुछ आधे–अधकचरे ज्ञान से पीड़ित होकर धार्मिक–सामाजिक विषयों पर अनर्गल लेख लिखकर सस्ती लोकप्रियता के लोभ में प्रकाशित करते हैं। इसके लिए आवश्यक है–

1. समय–समय पर जैन पत्रकारिता पर कार्यशाला आयोजित की जाए।

2. जैन पत्रकारिता नामक एक पुस्तक का प्रकाशन किया जाए जिसमें पुस्तक लेखन, सम्पादन कला, फीचर राईटिंग, रिपोर्टिंग, शीर्षक सेटिंग, सम्पादकीय लेखन, समाचार संप्रेषण कला, सम्पादक पत्रकार और प्रकाशक के अधिकार और कर्तव्य, कब–क्या–कैसे लिखें आदि विषयों का समावेश किया जाए।

3. जो पत्र–पत्रिकाएं अनियमित प्रकाशन, अव्यवस्था व अनेक विकृतियों का शिकार बनी हुई है, उनमें पर्याप्त सुधार किया जाये।

4. कुछ पत्र–पत्रिकाओं में आए दिन शिकायत प्रकाश में आती है कि उनके पाठक समय पर या लम्बे समय तक काफी निवेदन के बाद भी शुल्क प्रेषित नहीं करते हैं, परन्तु मेरी नजर में इसका सबसे बडा कारण पाठकों को समय पर पत्रिका नहीं मिल पाना है। कुछ पत्रिकाओं के प्रकाशक तो सालभर में मुश्किल से मात्र एक–दो अंक प्रकाशित कर पाठकों को शुल्क समाप्ति का परवान पकड़ा देते हैं।

5. जैन पत्रिकारिता की प्रतिष्ठा को आघात न लगे, इसलिये ऐसी पत्र–पत्रिकाओं पर कड़ी नजर रखना भी आवश्यक है।

पत्रकार, लालसोट (राजस्थान)

यह तो सर्वविदित है कि जो ताकत एक कलम में है; वह एक तलवार में नहीं है। यह तीखी कलम जब चलती है तो समाज में चेतना लाती है और उसको एक निश्चित लक्ष्य की ओर ले जाने में अपनी भूमिका निभाती है। परन्तु यही कलम यदि गलत दिशा में चलने लगती है तो वह समाज को छिन्न–भिन्न कर देती है।

विनोद शंकर दबे, पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय

(वर्तमान स्थिति....., पृष्ठ ६ का शेष)

दुनिया का हर सवाल धर्म संस्कार की दृष्टि से विश्लेषित किया जा सकता है। आज हम देखते हैं कि सन्तति-नियमन एवं गर्भ-निवारण के विवाद अपनी चरमसीमा पर पहुँच चुके हैं। इन प्रश्नों की नींव में भी धर्म संस्कार ही है। अमेरीकी सरकार कहती है कि जनसंख्या सीमित करने के कार्यक्रम के लिए वह इच्छित आर्थिक सहायता देने को तत्पर है। आवश्यकता होने पर वह किसी भी अभियान से जुड़ने को तैयार है। इसके साथ ही यही सरकार गर्भ निवारण विषयक बातों के लिए एक फूटी कौड़ी भी खर्च करने को तैयार नहीं है। इसी प्रकार धर्म दृष्टि पूत पत्रकार हर सामाजिक और आर्थिक सवाल की अहम भूमिका विश्लेषित कर सकता है। नौकरी पेशा जैन महिला की या गृह-उद्योगों के जरिये अपना पेट भरनेवाली स्त्री की सामाजिक समस्याओं पर भी वह दृष्टिपात करेगा। वास्तव में, धर्म संस्कार की ऐसी दृष्टि वर्तमान आर्थिक प्रश्नों को बहुआयामी बतायेगी। बड़े उद्योगों, सरकारी दफ्तरों अथवा बैंकों में ही नहीं ट्रेडयूनियन के प्रश्न अब तीर्थधामों की पीढियों को भी सताने लगे हैं। इन स्थितियों में एक 'जैन पत्रकार' क्या करेगा ? वह कर्मचारियों की उचित माँगों के लिए निश्चय ही तरफदारी करेगा। लेकिन वेतन के अनुपात में काम करने पर भी वह जोर देगा। वैयक्तिक जीवन में धर्म का कार्य है मूल्यों की प्रस्थापना। चाय की दुकान पर काम करने वाले मजदूर से दुकान-मालिक कहता है कि 'मिलावट वाली चाय तैयार करो,' उस क्षण में धार्मिक संस्कारों में पला मजदूर साहसपूर्ण ढंग से कहेगा कि 'भले ही मेरी नौकरी चली जाए', मगर 'मिलावटी चाय' मैं नहीं बनाऊँगा।

ठीक ऐसी ही भूमिका, एक जैन पत्रकार की होनी चाहिए, जो अपने मूल्यों के लिए अन्तिम क्षण तक खप जाने को तत्पर हो।

१३ बी चन्द्रनगर सोसायटी, जयभिक्खु मार्ग
पालडी, अहमदाबाद-३८०००७

(लोकतंत्र का ...., पृष्ठ ६ का शेष)

कौन करे ? युवा वर्ग ही वह शक्ति है। उसे मीडिया के साथ जुड़ जाना होगा। सूचना के अधिकार का भी निरन्तर उपयोग करना पड़ेगा। देश के बड़े-बड़े घोटाले इसी तरह सामने आ पाए। जो मीडिया-टीवी, अखबार, रेडियो, जनता का साथ नहीं दे, उसका घर में प्रवेश बन्द। जो ब्लैकमेल करता नजर आए, घटिया, नकारात्मक भाषा एवं सामग्री परोसे, अपने स्वार्थ के आगे लोकहित को गौण कर दे, उसका तुरंत सामूहिक रूप से बहिष्कार किया जाए। फिर देखना परिवर्तन कैसे आता है। तब पत्रकारों की लेखनी भी प्राणवान हो जाएगी। पाठक भी कलम के द्वारा फिर से पूजा जाने लगेगा। हमें आजादी को आजाद करने के लिए, 'जनता के द्वारा' लोकतंत्र को पुनः स्थापित करने को संकल्पित होना होगा।

सम्पादक - राजस्थान पत्रिका, जयपुर

सम्पादक निर्मल, उज्ज्वल एवं निर्विवाद समाज रचना में सहभागी बनें

☐ आचार्य जयन्तसेन सूरि

● सम्पादक समाज की रचना और स्थितियों को बहुत करीब से देखते हैं, जिसे वे पत्रों द्वारा प्रकाशित करते हैं।

● सभी सम्पादक निर्मल, उज्ज्वल एवं निर्विवाद समाज की रचना करने में सहभागी बनें, ऐसी मेरी हार्दिक भावना है।

● हम क्या हैं? हम जान रहे हैं। उसका विश्लेषण करने की जरूरत नहीं, हम क्या कर सकते हैं ? उसके बारे में सोचकर कार्य करना वर्तमान की जरूरत है।

● आप सभी वर्ग विशेष का उल्लेख न करते हुए, नये आयाम, नये मार्ग और नये विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे, तो समाज हित में उपयोगी हो सकता है।

● जैन समाज अल्पसंख्यक होते हुए भी, देश के प्रत्येक भाग में अपना नाम, दाम और काम लगाकर सभी अंगों की सेवा करने में निःस्वार्थ भाव से जुटा हुआ है।

● जिस समाज द्वारा अच्छे कार्य हो रहे हों, उसमें कुछ विकृति भी आ सकती है। हमें उस विकृति को रोकने की और अच्छे कार्यों को अन्य समाजों तक पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए।

● समाज के निर्माण के बारे में न सोचकर विघटन की ओर ध्यान देते हैं, तो मायुसी छा जाती है।

● इस युग में हम बोलेंगे तो लोग सुनेंगे। लिखेंगे तो पढेंगे। हमें ऐसा बोलना है, ऐसा लिखना है, जो समाज निर्माण को दिशा दे सके, समाज उत्थान में मील का पत्थर साबित हो सके।

● हमारे में कुछ बुराईयाँ आ गई है निश्चित है, कारण हमने हमारे घरों को बुराईयाँ पैदा करने वाले साधनों से भर दिया है। अब उस पर ब्रेक लगाना आवश्यक हो गया है।

● समाज के अच्छे कार्यों को और विशेष कार्यों को सभी समाजों के सामने लाने का उत्तरदायित्व सम्पादकों का है।

● चतुर्विध संघ में बुराईयाँ आ गई हैं, हमें अपने से उन बुराईयों को बाहर करने की पहल करनी चाहिए।

● धार्मिक क्रियाओं में जितना आडम्बर बढा है उससे कई ज्यादा आडम्बर तो व्यवहारिक कार्यों में बढ गया है। उसे रोकने की पहल हमें स्वयं से ही करनी चाहिये।

● आडम्बर के तहत वर्तमान में रात्रि भोजन और अभक्ष्य पदार्थों का चलन विशेष वर्ग से सामान्य वर्ग में केंसर की भाँति फैलता जा रहा है, उसे न रोक कर हम हमारी भावी पीढी को दिशा शून्य एवं जिन शासन से दूर करने का घोर पाप कर रहे हैं, क्या हमें यह सब शोभा देता है?

● वर्तमान में करीब-करीब सभी सम्पादक एक बात से सहमत हैं कि सभी अंग

एक मंच पर आकर एक हो जाए, इन्हीं विचारों को, उन सभी स्वरों को एक स्वरूप करने के लिए मैंने ऐसी संगोष्ठियाँ आयोजित करने की प्रेरणा दी।

- ऐसी संगोष्ठियों के माध्यम से ही हम अपने भावों को समाज के सामने रख निर्माण-कार्य में तेजी ला सकते हैं।
- अव्यवहारिक शब्दों पर प्रतिबंध लगाकर स्वतंत्र विचारों वाले सम्पादक, समाज को जोड़ने का कार्य बखूबी कर सकते हैं।
- साधनों की कमी और धन के अभाव में भी इतनी जैन पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है, यह आश्चर्यजनक सत्य है।
- समाज के प्रबुद्ध एवं धनाढ्य वर्ग का ध्यान जैन सम्पादकों की ओर आकर्षित नहीं हो रहा है, यह दुःखद स्थिति है।
- जैन सम्पादक अपने मूल्यों को विवशता की दृष्टि से न देखकर अपना कर्तव्य समझता है, उन विचारों का प्रस्तुत कर समाज में नई क्रांति पैदा कर रहा है, यह उल्लेखनीय है।
- शिथिलता सर्वत्र बढ़ चुकी है, उसे आचार प्रणाली से ही काबू में लाई जा सकती है, आचारों का प्रतिपादन प्रत्येक सम्पादक को बार-बार करना चाहिये।
- इस प्रकार की संगोष्ठियों का आयोजन निश्चित रूप से समाज हित में बढाया गया कदम है।
- इस संगोष्ठी के माध्यम से समाज के कमजोर साधर्मिकों की ओर ध्यान देना और उन्हें विचार, विवेक और विनय में अग्रसर कर उनकी जरूरतों को पूर्ण करना/कराना सम्पादकों का विशेष कार्य है।
- साधुओं के बारे में फैली भ्रान्तियों को दूर कर युवा वर्ग को जिन शासन की ओर गतिशील करना, प्रत्येक सम्पादक का कर्तव्य होना चाहिए।
- निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले सम्पादक, आर्थिक दृष्टि से कमजोर, सम्पादक और प्रबुद्ध सम्पादकों के लिए एक ऐसे कोष की आवश्यकता है जो उन्हें संबल दे सके, उनके विचारों की समाज हित में प्रकाशित करने का स्थान उपलब्ध करा सके।
- इन्द्रधनुष जैसी मन मोहक, मन लुभावन कलम के धनी सम्पादक ही हो सकते हैं, जो अपनी निद्रा, अपना मनोबल और विचारों का दान करने से नहीं चूकते।
- आप सभी के विचारों को सुनकर, आपकी जिज्ञासाओं को जानकर लगता है। शायद जिन शासन का भविष्य काल सुनहरा, आकर्षक और निर्विवाद से पूर्ण होगा।
- सम्पादकों को कलम का धनी कहा गया है, उनके धन का विनाश तीनों कालों में असंभव है।
- स्वर और कलम हमेशा सीधे चलकर मानवता को आयुष्य प्रदान करते हैं।
- स्वर की साधना और कलम की आराधना हर कोई नहीं कर सकता।

जैन पत्रकारिता स्थिति समस्या और संभावना

□ डॉ. नरेन्द्र भानावत

जनसंचार माध्यमों से आज पत्र-पत्रिकाओं का व्यापक महत्व और प्रभाव है। आज पत्रकारिता ने व्यवसाय और उद्योग का रूप धारण कर लिया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योग प्रतिष्ठान हैं। ऐसी स्थिति में जैन पत्रकारिता पर जब हम विचार करते हैं तो उसका महत्व नगण्य सा प्रतीत होता है पर व्यवसाय से परे हटकर जब विचार सामग्री और सांस्कृतिक मूल्यवत्ता के संबंध में सोचते हैं तो जैन पत्रकारिता अपनी अलग पहचान रखती प्रतीत होती है। शताधिक वर्षों से अधिक समय तक जैन पत्रकारिता अपने अल्प साधनों और सीमित क्षेत्र में भी मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है।

जैन पत्रकारिता का आरम्भ मिशन भावना से हुआ। उसका प्रमुख उद्देश्य रहा जैन तत्त्व दर्शन का विवेचन, विश्लेषण, सम्यक् जीवन दृष्टि का विकास, जैन संत सतियों के विचारों, पदयात्राओं, विहार चर्याओं, धार्मिक प्रेरणाओं तथा सद्गृहस्थों की धार्मिक क्रियाओं आदि का विवरण प्रकाशन। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया त्यों-त्यों इन उद्देश्यों में व्यापकता आती गई और जैन समाज की विविध समस्याओं का अंकन भी यथाप्रसंग जैन पत्र-पत्रिकाओं में होने लगा। आज सामान्य पत्रकारिता में सांस्कृतिक सामग्री की अपेक्षा राजनीतिक घटना चक्रों की गरमाहट, सामयिक जीवन की विसंगतियों और आपराधिक प्रवृत्तियों के समाचारों की प्रधानता रहती है। उनका उद्देश्य सस्ता मनोरंजन प्रदान करना भी होता है। पर अधिकांशतः जैन पत्र-पत्रिकायें इन घटना चक्रों से संपृक्त न रहकर केवल तात्विक सामग्री प्रस्तुत करती हैं। यह स्थिति इन पत्र-पत्रिकाओं की शक्ति भी है और सीमा भी है।

देश में जैन धर्मावलम्बियों की जनसंख्या के अनुपात में जैन पत्र-पत्रिकाओं का बड़ी संख्या में प्रकाशन, उनकी धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक निष्ठा और जागृत चेतना का प्रतीक है। देश में लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में प्रत्येक क्षेत्र से जैन पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक सभी तरह की पत्रिकायें लगभग २५० की संख्या में प्रकाशित होती हैं। यदि प्रतिमाह औसतन ५० पृष्ठ एक पत्रिका के मान लिए जायें तो प्रतिमाह १२५०० पृष्ठ छपते हैं। विचारणीय विषय यह है कि इन पृष्ठों की विषय सामग्री और प्रस्तुतिकरण का व्यक्ति और समाज पर कितना और कैसा प्रभाव पड़ता है तथा कितने लोगों तक यह सामग्री पहुंचती है।

सामान्यतः देखने में आया है कि गिनती के कुछ पत्रों को छोड़कर अधिकांश पत्रों की सम्पादन एवं प्रबंध की स्थिति संतोषजनक नहीं है। न तो पत्रों के निश्चित कार्यालय हैं और न निजी प्रेस है, न सामग्री को सम्पादित एवं संशोधित करने वाले व्यक्ति हैं, न अनुभवी चिन्तनशील प्रबुद्ध लेखक हैं न पर्याप्त ग्राहक संख्या है और न सम्पादन दृष्टि है। सम्पादन संस्कार और साज सज्जा की तो बात ही दूर। इस

स्थिति के कई कारण हैं। जो पत्र सक्रिय संस्थाओं अथवा साम्प्रदायिक संघों आदि से संबंधित हैं वे साधन सम्पन्न होने पर भी व्यापक दृष्टिकोण और उदार नीति की कमी के कारण बृहत् समाज को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाते हैं। कभी-कभी तो ये प्रेम और सौहार्द बढाने के स्थान पर तनाव भी पैदा कर देते हैं। ऐसे पत्रों से एक विशेष प्रकार के साम्प्रदायिक पाठकों का वर्ग बन जाता है। संत महात्माओं की प्रेरणा से आरंभ किये जाने वाले पत्रों की स्थिति भी बहुत अधिक संतोषजनक नहीं कही जा सकती। जब तक उनका प्रेरणा बल बराबर बना रहता है और वे उसके संपृक्त रहते हैं तब तक तो पत्र की स्थिति ठीक बनी रहती है, पर ज्योंही उनका संपर्क कम होता है तो वह पत्र नियमित भी नहीं रह पाता। व्यक्तिगत पत्रों में अर्थ की कठिनाई बराबर बनी रहती है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि जैन पत्रकारिता का धरातल अब भी मुख्यतया धार्मिक बना हुआ है। उसे विस्तृत सांस्कृतिक सन्दर्भों से जोड़ने की बड़ी आवश्यकता है। जिसप्रकार जैनधर्म अपने में विराट मानव मूल्यों को समाहित करके भी संकीर्ण घेरे में बंदी है, उसी प्रकार जैन पत्र भी अपनी विचार सामग्री में मानव मूल्यवाही जीवन निर्माणकारी सामग्री संजोकर भी सामान्यतः जैन पाठकों तक ही कहना चाहिये सम्प्रदाय विशेष तक ही अलग-अलग वर्गों में सीमित है। अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या २ हजार से कम है। इने गिने ही पत्र ऐसे हैं जो ५ हजार से अधिक छपते हैं। जैन पाठकों के अतिरिक्त अन्य लोगों तक इन पत्रिकाओं की पहुंच बहुत कम है। जैन पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक बनाने की आवश्यकता है। इसके लिये जिला पुस्तकालयों, सूचना केन्द्रों, प्रमुख शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों, विशिष्ट विद्वानों, प्रबुद्ध विचारकों आध्यात्मिक केन्द्रों को निःशुल्क अथवा रियायती मूल्य पर इन्हें पहुंचाने की व्यवस्था की जानी चाहिये।

जैन पत्रकारिता के दो मुख्य पक्ष हैं - वैचारिकता और समाचार-प्रेषणीयता। वैचारिकता में जैन पत्रकारिता मुख्यतः धर्म दर्शन और तत्त्व विश्लेषण तक ही सीमित है। जैन वांगमय अपनी प्राचीनता और विविधता में अप्रतिम हैं। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक सन्दर्भों में भी वह भरा पड़ा है। भारतीय संस्कृति और उसके माध्यम से मानव संस्कृति के अध्ययन अध्यापन एवं अनुसंधान में जैन वांगमय का उपयोग अपरिहार्य है। यह उपयोग जैन पत्रकारिता के माध्यम से सहज सम्पन्न कराया जा सकता है अतः यह आवश्यक है कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जैन साहित्य, इतिहास, पुराण, भूगोल, ज्योतिष, गणित, अध्यात्म, संगीत, स्थापत्यकला, पुरातत्व जैसे विविध स्तम्भ संयोजित किये जायें और उनमें जैन स्रोतों से प्राप्त सामग्री का प्रकाशन किया जाये। इस दिशा में भी प्रयत्न हो कि जैन साहित्य, जैन इतिहास और पुरातत्व जैन विज्ञान, जैन कला से संबंधित विशिष्ट पत्रिकायें प्रकाशित हों।

जैन पत्रकारिता में समाचारों का भी अपना विशेष महत्व है। समाचार समाज

की सम सामयिक गतिविधियों और प्रवृतियों के दिग्दर्शक होते हैं। इन्हीं समाचारों का उपयोग कर धार्मिक और सामाजिक इतिहास का निर्माण किया जाता है। उनके प्रकाशन में विवेक और सावधानी की बड़ी आवश्यकता है। समाज को कमजोर बनाने वाले, एकता को आघात पहुंचाने वाले, थोथी प्रशंसा और मिथ्या प्रचार करने वाले समाचारों से न केवल पत्रिका का स्तर गिरता है वरन् उससे समाज में विघटन भी पैदा होता है। वर्तमान में कोई ऐसी एजेन्सी नहीं है न ऐसे संवाददाता है जो प्रत्येक क्षेत्र से ठीक समय पर विश्वसनीय और महत्वपूर्ण समाचार जैन पत्रिकाओं को भेज सकें। परिणामस्वरूप डाक के द्वारा जो भी समाचार आते हैं, चाहे वे किसी के माध्यम से आयें उन्हें यथा सुविधा प्रकाशित कर दिया जाता है। उनका सम्पादन, संशोधन बहुत कम होता है। जैन पत्रकारिता को विशेष प्रभावकारी व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि केन्द्रीय स्तर पर जैन समाचार भारती जैसी संस्था का संगठन किया जाये और प्रत्येक प्रांत में संवाददाता नियुक्त हों, प्रान्तीय संवाददाता प्रत्येक जिले में सह संवाददाता नियुक्त करें। इस व्यवस्था से जैन पत्र समाज के दर्पण और दीपक बन सकेंगे।

किसी भी पत्र-पत्रिका में सम्पादकीय लेखों का अपना विशिष्ट महत्व होता है। अधिकांश जैन पत्र-पत्रिकाओं में सम्पादकीय लेख होते ही नहीं और जिनमें सम्पादकीय लेख होते हैं उनमें कुछेक को छोड़कर प्रायः सम्पादकीय संक्षिप्त व साधारण होते हैं। स्वस्थ, विचारशील, सुधारप्रिय, तटस्थ और निर्भीक समाज में घटित स्थितियों के मार्गदर्शक सम्पादकीय लेखन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना अत्यन्त आवश्यक है।

जैन पत्रकारिता व्यवसाय न होकर एक विचार है, जीवन पद्धति है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में और भारतीय लोकजीवन तथा लोक धर्म के साक्षात्कार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। जैन पत्रकारिता सादा जीवन अहिंसक दृष्टि, सेवा कार्य, वात्सल्यभाव, आध्यात्मिक स्फुरणा, नैतिक उन्नयन, शाकाहार, जीवदया, क्षमा, प्रेम, मैत्री जैसे मूल्यों के विकास के लिये समर्पित है। ये मूल्य सार्वजनिक क्षेत्रों में संप्रेषित हों इसके लिए जैन पत्रकारिता को सार्वजनिक क्षेत्र की पत्रकारिता के रूप में प्रतिष्ठित करने की संभावनाओं का पता लगाना आवश्यक है। हमारे इर्द गिर्द ऐसे निष्काम, सेवाभावी व्यक्तित्व हैं जो समाज सेवा के लिये समर्पित हैं। उनके प्रेरक जीवन प्रसंगों को और लोक कल्याणकारी सेवाभावी संस्थाओं की प्रवृत्तियों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया जा सकता है।

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण में बच्चों, युवकों और महिलाओं की प्रभावकारी भूमिका होती है। बच्चों के संस्कार निर्माण युवकों के रचनात्मक दृष्टिकोण और महिलाओं की शक्ति को जागृत और विकसित करने की दृष्टि से जैन पत्र-पत्रिकाओं में विशेष सामग्री दिया जाना आवश्यक है। अभी बच्चों, युवकों और महिलाओं से संबंधित एकाध पत्र-पत्रिकायें ही निकलती हैं। इनकी संख्या बढाई जानी चाहिए। ज्ञान के विकास के साथ-साथ साक्षरता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। जैन समाज को शत-प्रतिशत साक्षर

कहना अत्युक्ति नहीं होगा। प्रत्येक परिवार में अध्ययन की रुचि है और जहाँ नहीं है उसे जागृत किया जा सकता है। जिन परिवारों में पारस्परिक संस्कार नहीं हैं, वे वाजारों में बिकने वाली सस्ती पुस्तकें पत्र-पत्रिकायें तो पढते हैं पर सद्विचार प्रेरक पत्र-पत्रिकाओं से उनका सम्पर्क नहीं हो पाता। अतः रोचक, बहुरंगी, सचित्र कथा प्रधान पत्रिकाओं के प्रकाशन की बड़ी संभावनायें हैं। जैन कथा साहित्य अत्यन्त समृद्ध और वैविध्यपूर्ण है। अतः सचित्र कथा प्रधान पत्रिकाओं के लिए बड़ी मांग पैदा की जा सकती है। जैन कथाओं के माध्यम से सार्वजनिक पत्र-पत्रिकाओं को समृद्ध करने का कार्य भी जैन लेखकों पत्रकारों और सम्पादकों द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिये।

जैन पत्रकारिता की साज-सज्जा और मुद्रण प्रक्रिया पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अधिकांश पत्रकारों और सम्पादकों को भी किसी विशेष प्रकार का प्रशिक्षण और अनुभव नहीं है। कई पत्रों के सम्पादक वे लोग हैं जो उन पत्रों को आर्थिक सहयोग देते हैं अथवा सम्बद्ध संस्था विशेष के मंत्री या अध्यक्ष हैं। अनुभवी पत्रकारों एवं सम्पादकों के अभाव में जैन पत्रकारिता की साज सज्जा और छपाई सफाई विशेष आकर्षक नहीं बन पाती है। सम्पादक का कार्य उद्यान के माली की तरह होता है। वह अनावश्यक घास-फूस और झाड़ झंकाड़ को दूर कर उद्यान के सौंदर्य को द्विगुणित करता है। सम्पादन संस्कार के अभाव में अधिकांश जैन पत्र-पत्रिकायें अपना प्रभाव नहीं छोड़ पातीं। जैन पत्रों की भाषा भी सुबोध और स्पष्ट होनी चाहिए। कई बार ऐसा देखा जाता है कि लेखों की भाषा दुर्बोध, बोझिल और पारिभाषित शब्दावली से लदी होती है। भाषा को संस्कारित, सरल और सहज बनाने का दायित्व सम्पादकों को है। इसके लिये प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना करना आवश्यक प्रतीत होता है।

जैन पत्रकारिता का साहित्य संरक्षण और सृजन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेक पत्रकाओं के माध्यम से आगमिक, दार्शनिक और कथा साहित्य सरल और सरस बनकर पाठकों के समक्ष आया है। समय-समय पर कविता, कहानी, नाटक, संस्मरण, ललित लेख आदि के प्रकाशन द्वारा रचनात्मक साहित्य विपुल परिमाण में निर्मित हुआ है और समाज में कई नये साहित्यकार सामने आये हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से श्रेष्ठ रचनात्मक साहित्य का चयन कर विविध विधा विषयक प्रतिनिधि ग्रन्थ प्रकाशित किये जाने चाहिए।

अधिकांश जैन धर्मानुयायी उद्योगपति और व्यवसायरत हैं। देश के औद्योगिक विकास में उनका बड़ा योगदान है। सार्वजनिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किये हैं। राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जैन पत्रकारों, सम्पादकों और लेखकों की कमी नहीं है। आवश्यकता है सबको मिल बैठकर एकजुट होकर जैन पत्रकारिता को संस्कारित और सुनियोजित करने की। इसके लिये एक केन्द्रीय नियामक मंडल गठित किया जाना चाहिये। विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होने वाले जैन पत्रिकाओं में परस्पर आदान-प्रदान करने की भावना से एक अन्तरभारती परामर्श मंडल भी बनाया जाना चाहिये।

उपर्युक्त विवेचन में जैन पत्रकारिता की शक्ति और सीमा का संक्षिप्त निर्देशन किया गया है। इससे स्पष्ट है कि जैन पत्रकारिता की स्थिति निराशाजनक नहीं है। उसमें सतत् विकासशीलता और नित्य नवीनता का बोध है। देश में शायद ही कोई ऐसा समुदाय है जो इतने अल्पमत में होकर भी इतनी बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित करता हो। जैन पत्रकारिता की जहां यह शक्ति है वहां उसकी यह भी एक सीमा है कि पत्र-पत्रिकाओं की इतनी भारी भीड़ में से सर्व जनोपयोगी, सर्वसंतोषकारी, सम्प्रदाय रहित एकाध से अधिक पत्रिकाओं को पहचाना जा सके। सद्विचार प्रवर्तनकारी, मानव मूल्यों की संवाहिका स्वस्थ पत्रकारिता को प्रोत्साहन देने के लिये अखिल भारतीय स्तर पर एक जैन पत्रकारिता पुरस्कार का प्रवर्तन करना अधिक समीचीन होगा। ●

सफलता के गुरुमंत्र

१.पहले घर पर सफल बनो, फिर व्यापार में।
२. ईश्वर की मदद लो और उसके योग्य बनो।
३. ईमानदारी से कभी समझौता मत करो।
४. जो लोग आपकी सफलता में शामिल हों, उन्हें याद रखो।
५. निर्णय लेने से पहले दोनों पक्षों की सुनो।
६. जो नहीं है उसे पाने की सोचो।
७. निष्कपट निर्णायक बनो।
८. हर साल एक नई योग्यता प्राप्त करो।
९. कल के काम की योजना आज बनाओ।
१०. इंतजार करते समय आगे बढो।
११. सकारात्मक नजरिया बनाये रखो।
१२. स्वयं को और अपने काम को व्यवस्थित रखो।
१३. गलतियों से मत डरो।
१४. अपने अधीनस्थों की सफलता को आसान बनाओ।
१५. जितना बोलो उससे दुगुना सुनो।
१६. अपने काम पर खुद को केन्द्रित करो।
१७. अगले काम के बारे में चिंता मत करो।
१८. हर काम का अंत ध्यान में रखकर शुरु करो।

क्योंकि अंत को ध्यान में रखकर शुरु करने का मतलब है कि अपनी मंजिल को अच्छी तरह समझकर यात्रा शुरु करना। ताकि आपके कदम हमेशा सही दिशा में बढते रहें।

अपने चरित्र को साफ सुथरा रखें। क्योंकि किसी भी प्रोफेशनल डिग्री या ओहदे से बड़ा उदार, लचीला और सकारात्मक दिमाग होता है। इसी से व्यक्ति संयमित रहना सीखता है। ●

संगठन की सुदृढता का आधार समर्पण व सौहार्द

□ डॉ. राजीव प्रचण्डिया

सुदृढ संगठन किसी भी संस्था या संघ को गरिमा प्रदान करता है। प्रायः ये देखने सुनने को मिलता है कि अमुक संस्था बनी, थोड़ी दूर चली और फिर बंद हो गई। अमूमन यही होता है। संस्थायें बनती हैं, थोड़े दिनों तक चलती हैं, लोगों को अपनी ओर लुभाती हैं और फिर अंततः कलह या किसी अन्य कारणों से बंद भी हो जाती हैं। इस संदर्भ में मुझे एक बात कहनी है कि हम सब इस जैन पत्र सम्पादक संघ से जुड़े हैं तो हम सबमें परस्पर सहजता और सौहार्द के सूत्र इतने गहरे हों कि लोगों को लगे कि हम सब अनेक होते हुए भी एक हैं। हमारे पास जो भी कोई पद हो, लेकिन हमारी आवाज एक ही है। हममें मतभेद तो हो सकते हैं, पर मनभेद कभी नहीं होना चाहिए। मनभेद से व्यक्ति टूटता है, संस्था अंदर से खोखली व कमजोर हो जाती है। जो कालान्तर में टूटकर बिखर जाती है। संस्था के कमजोर होने का या बिखरने का एक प्रमुख कारण ईगो भी है। कुर्सी, सत्ता या पद पाने की जो ईगो है, उससे संस्था में दरार पड़ती है। हालाँकि यहाँ ऐसा कुछ नजर नहीं आता, फिर भी ईगो हावी न हो इस पर ध्यान रखना या सावधान होना संस्था के हित के लिये अत्यंत आवश्यक है। संस्था मजबूत बनी रहे इसके लिये एक दूसरे को सहयोग करने की भावना हमें जगाये रखनी हैं। मेरी धारणा है कि किसी भी संस्था के लिये और अधिक सदस्य बनाना इतना जरूरी नहीं है जितना जरूरी है जो बने हुए हैं, उनमें परस्पर सामंजस्य स्थापित करना। एकसूत्र में रहकर दिग्भ्रमित समाज को सही दिशा देना, समाज को उन गतिविधियों से रूबरू कराना जो रोजमर्रा में घट रही हैं, यानि अधिकारिक रूप से समाज से जुड़े रहना अर्थात् समाज को अधिक जानकारी पहुँचाने के लिये हम सब संकल्पित हों।

समाज में पत्र पत्रिकाएँ चौथे स्तंभ के रूप में परिगणित हैं। समाज में अनेक पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। जहाँ तक मेरी नजर दौड़ती है, उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि जैन समाज ही अकेला ऐसा समाज है जहाँ प्रभूत संख्या में यानि 450 पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। इतनी संख्या शायद ही किसी अन्य समाज में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं की हो। इससे लगता है कि जैन समाज अन्य समाज की अपेक्षा कितना जागरुक और अप–टू–डेट है। समाज में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, षट्मासिक, वार्षिक जो भी पत्र प्रकाशित हो रहे हैं, मुख्यतः उनके दो रूप हैं, एक तो संस्था से जुड़े पत्र और दूसरे व्यक्तिगत पत्र। संस्था से जुड़े पत्रों का निर्वहन तो संस्था कर लेती है किन्तु व्यक्तिगत पत्र निजी व सीमित स्रोतों से प्रकाशित होने के कारण उन्हें अनेक स्थितियों एवं कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। संगठन का दायित्व है कि वह ऐसे पत्र पत्रिकाओं को संज्ञान में लेकर उन्हें अपने

(शेष पृष्ठ २६ पर)

संवाद योजना : एक सार्थक पहल

☐ प्रा. नरेन्द्रप्रकाश जैन

किसी भी प्रकार की चर्चा (वार्ता या बातचीत) के चार रूप हो सकते हैं – वाद, विवाद, संवाद और विसंवाद, हमारा अपना सोच है कि इन चारों में से केवल 'संवाद' ही बातचीत का एक ऐसा रूप (या ढंग) है, जिसे हम सर्वथा उचित श्रेणी में रख सकते हैं। 'विसंवाद तो सर्वथा अनुचित ही है।' अब रही बात 'वाद' और 'विवाद' की तो उन्हें हम कथंचित उचित और कथंचित अनुचित मानते हैं। क्यों ? इसे स्पष्ट करने के लिए हम अपना विचार यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

बहुत पहले धार्मिक सिद्धांतों के प्रति व्याप्त भ्रम–निवारण के लिए उभय पक्ष के विद्वानों के मध्य 'वाद' या शास्त्रार्थ हुआ करते थे। उसके पीछे तत्त्व–निर्णय का भाव निहित रहता था। **'वादे–वादे च जायते तत्त्वबोधः'** की नीति के अनुसार इसे अनुचित नहीं कहा जा सकता, परन्तु दोनों पक्षों में अथवा दोनों में से किसी एक पक्ष में स्वयं जीतने और दूसरे को हराने का अहंकार आ जाए तो उसे उचित कैसे कहेंगे? 'विवाद' में भी पक्ष और विपक्ष दोनों होते हैं। एक पक्ष स्वमत का मण्डन और दूसरा उसका खण्डन करता है (जैसे – शिक्षा–संस्थाओं में चलने वाली वाक्–प्रतियोगितायें, जिनका उद्देश्य छात्रों की वक्तृत्व–शक्ति एवं अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना है।) यह प्रतियोगिता संयत और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के रूप में चले तो उचित है, किन्तु मनभेद का कारण बन जाए तो अनुचित है।

'संवाद' के सन्दर्भ में कुछ कहने से पूर्व हम 'विसंवाद' के अर्थ और स्वरूप पर एक दृष्टि डालना अधिक उपयुक्त मानते हैं, जो बातचीत घण्टों, महीनों और वर्षों तक चलती रहे, किन्तु जिसका कोई नतीजा न निकले तथा बतियाते–बतियाते कर्कश, कठोर और कटु शब्द–बाण चलने लगें, उसे कहते हैं, विसंवाद। ऐसे अन्तहीन एवं परिणाम–शून्य विसंवादों से समाज टूटता–बिखरता है, धर्म का अपयश तथा पाप का आस्रव होता है। पूज्य आचार्य योगीन्द्रदेव ने **'नैव गच्छन्ति तत्त्वान्तः'** कहकर ऐसे–ऐसे विसंवादों की व्यर्थता सिद्ध कर दी है। स्पष्ट रूप से वह कहते हैं कि इसप्रकार की निःसार बातों से (किसी को) कभी कुछ नहीं प्राप्त होता इसीलिए हमें एक कदम और आगे बढकर कहना चाहते हैं कि **विसंवाद सर्वथा अनुचित ही नहीं, हेय या त्याज्य ही है।**

'संवाद' कहते हैं ऐसी बातचीत को, जो हमारा या धर्म और समाज की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करे, उलझनों को सुलझाये तथा निर्णय–रूप हो। संवाद हमेशा ही सकारात्मक होता है। वह रूठे हुओं को मनाता है, समाज में सद्भाव उत्पन्न करता है और अपयश के दाग–धब्बों को मिटाता है। समर्थ रामदास ने ठीक ही कहा है – **'तुटे वाद, संवाद तर्थे करावा'** अर्थात् जहाँ विवाद को मिटाकर संवाद उत्पन्न हो, ऐसी ही चर्चा करनी चाहिए। **'संवाद' ही सर्वथा उचित है'** इस तथ्य या कथ्य में सन्देह के लिए कोई अवकाश ही नहीं है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के यशस्वी अध्यक्ष श्री आर.के. जैन ने 'संवाद–2009' के रूप में अतिशयक्षेत्र तिजारा से इस अनोखी योजना का सूत्रपात किया था। 'संवाद–2010' का आयोजन एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के रूप में मैसूर में सम्पन्न हुआ, जिससे देश–विदेश में इसका सिक्का जम गया। इसी क्रम में तीसरा आयोजन 'संवाद–2011' अभी पिछले दिनों ही **'तमिलनाडु जैन तीर्थदर्शन'** की अभिनव परिकल्पना के साथ अर्हन्तगिरि (चेन्नई) को केन्द्र बनाकर 25 दिसम्बर 2011 से 1 जनवरी 2012 तक सम्पन्न हो चुका है। इन आयोजनों में सम्मिलित होने वाले विद्वज्जनों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के यात्रा–व्यय, आवास–व्यवस्था, भोजनादि का सम्पूर्ण आर्थिक दायित्व स्वयं श्री आर. के. जैन और उनकी टीम के सदस्य वहन करते हैं, तीर्थक्षेत्र कमेटी पर उसका वजन नहीं आने देने। यह एक प्रशंसनीय बात है।

साधु, श्रेष्ठी, सुधीजन, समाजसेवी एवं सेवा–समर्पित सामान्यजनों के बीच समुचित समन्वय, सद्भाव और सहयोग के बने रहने पर ही किसी भी संस्था, समारोह या संयोजना को सफल बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से 'संवाद–योजना एक सार्थक पहल है।

सर्वश्री आर. के. जैन, बहिन सरिताजी, डॉ. नलिन शास्त्री और वकील सा. (अनूपचंद जैन) का औपचारिक एवं व्यक्तिगत भी प्रबल आग्रह था कि हम 'संवाद–2011' में अवश्य शामिल हों। इच्छा भी थी। वकील सा. ने तो हमारी टिकटें भी अपने साथ ही आरक्षित करा ली थीं, किन्तु अन्तराय–कर्मोदयवश टिकटें कैंसिल करानी पड़ी। बाधायें दो आईं – एक तो धर्मपत्नी का अचानक अस्वस्थ होना और दूसरे सहोदर–समान बड़े भाई का देहावसान।

कहते या सुनते तो यही हैं कि प्रत्यक्ष देखकर यात्रा में जो आनन्द आता है, वह उसका विवरण सुनकर नहीं आ सकता। **आँखें जिस आनन्द को पीती हैं, वह कभी सूखता नहीं है, पर कानों से पिया सूख भी सकता है।** जो भी हो हमारा मन तो यात्रा कर चुके विद्वानों से उसका विवरण सुनकर भी बहुत प्रफुल्लित है। इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि जैनबद्री के स्वस्ति श्री चारूकीर्ति स्वामी की प्रशस्त प्रेरणा एवं अर्हन्तगिरि के भट्टारक स्वस्तिश्री धवलकीर्तिजी तथा मेल चित्तामूर के भट्टारक स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेनजी महाराज के कृपा–सौजन्य से हम पहले भी एक बार तमिलनाडु के तीर्थों के दर्शन कर चुके हैं। इस बार सुनकर वे यादें ताजा हो उठी हैं।

श्रीयुत् आर. के जैन के नेतृत्व में उनकी पूरी टीम को इस संवाद–योजना के लिए भूरिशः साधुवाद उन्होंने अपनी अपराजेय ऊर्जा और उमंग से **'योजकस्तत्र दुर्लभः'** के कथन को झुठला दिया है। ●

104, नई बस्ती, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

संवाद 11 और तमिलनाडु की यात्रा

□ डॉ. प्रेमचंद रांवका, जयपुर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्त्वावधान में दिनांक २५ दिसम्बर से १ जनवरी २०१२ तक आयोजित संवाद-११ के सातत्य में दक्षिण भारत के तमिलनाडु प्रान्त के दिगम्बर जैन तीर्थों के वैभवशाली पुरातत्व सम्पदा से सम्पन्न जैनधर्म-संस्कृति के प्रभाव को देखने का शुभ अवसर मिला।

प्रसिद्ध श्रमण संस्कृति की आचार्य परम्परा के प्रवर्तक प्रातः वन्द्य आचार्य भद्रबाहु, आचार्य अकलंक, आचार्य समन्तभद्र, आचार्य कुन्दकुन्द आदि की तपोभूमि, साधना-स्थली और तप-त्याग से पवित्र विशाल पुरातत्व-सम्पदा के साथ सहस्रों वर्ष प्राचीन विशाल जिनालय, विशाल जिनबिम्ब, तीर्थंकर प्रतिमाएं, विशाल मानस्तम्भ और विशाल ध्वजदण्ड, विशाल गोपुरम् और विशाल शिखरों से युक्त मन्दिर, प्राचीन कलाओं से वेष्ठित मण्डप, गर्भगृह, प्रस्तर-अभिलेख, पर्वत, साधना-स्थली गुफाएं जैन संस्कृति के प्रभावशाली वैभव के दर्शन कर हम अत्यन्त आनन्दित, हर्षित और आत्म-विभोर हो उठे।

चेन्नई सेन्ट्रल रेल्वे स्टेशन पर प्रतिग्रहण जैन धर्मशाला में विश्राम एवं आतिथ्य के साथ प्रारम्भ इस अभिनय यात्रा में शास्त्री परिषद, विद्वत्परिषद एवं ऋषभदेव विद्वत्महासंघ के विशिष्ट विद्वान पत्रकार, सम्पादक ; सपत्नीक १४७ के लगभग प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। दि. २५ दिस. की सायं तिरुमलै के श्री क्षेत्र अरिहंत गिरि तीर्थ पर प.पू. भट्टारक श्री धवलकीर्तिजी स्वामी, तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.के.जैन, चेन्नई की दान चिन्तामणि श्रीमती सरिताजी, भामाशाह श्री महेन्द्रजी जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल, श्री सुरेशजी-श्री कमलजी ठोलिया, श्री अशोकजी सेठी आदि ने भावभीना स्वागत किया और पूरे सप्ताह पर्यन्त आवास, नाश्ता, सुस्वादु भोजन तथा तीर्थों के दर्शन हेतु ए.सी. युक्त वाहनों की समीचीन व्यवस्था से एवं मधुर व्यवहार से सभी के मन जीत लिये और आत्मीयता का भाव भर दिया।

सप्त दिवसीय इस अविस्मरणीय आयोजन में तमिलनाडु के प्रमुख तीर्थ करन्दई, तिरुपरम्बोर, तिरुपति कुण्डरम्, आरथाकम्, नागरल, पोन्नूरमलै, वेलकम्, वडली, जिनकांची मठ, मेलचित्तामूर - जहां भट्टारक श्री लक्ष्मीसेनजी ने सभी का स्वागत किया, आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पर चरण आलाग्राम, पैरामण्डूर, पाण्डीचेरी, नेमिगिरि पर्वत पर भ.नेमिनाथ की १५०० वर्ष प्राचीन १८ फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा, कैडुरम्, आ.अकलंक देव की शास्त्रार्थ स्थली करन्दई सहित १८ तीर्थों के अभिनव दर्शन हुये। इस स्वर्णिम यात्रा में श्री रामपुरम स्वर्ण मन्दिर

(शेष पृष्ठ ३० पर)

सरिता जैन से अखिल बंसल की सीधी बात

अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल को एक विशेष भेंट में श्रीमती सरिता जैन ने सरिता जैन फाउण्डेशन की गतिविधियों के बारे में सीधी बात की जो यहां प्रस्तुत है –

अखिल बंसल. : सरिता जैन फाउण्डेशन का उद्देश्य क्या है ?

सरिता जैन : यह एक गैर सरकारी सेवाभावी संस्था है जिसका उद्देश्य सभी के प्रति समभाव रखते हुए जनसेवा करना है। संस्था द्वारा श्रीक्षेत्र अरिहंतगिरि के आस–पास के गांव का विकास प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मंदिरों का संरक्षण तथा विकास, राशन, वस्त्रों तथा दवाईयों का मुफ्त वितरण करना तथा चिकित्सा सेवा को लोगों के पास पहुंचाना अन्य प्राथमिकताओं में शामिल है। शक्तिहीनजनों की चिकित्सा के लिए धन उपलब्ध कराना, कठिन रोगों के इलाज के लिए सुविधा प्रदान करना। कैंसर जैसे असाध्य रोगों के इलाज के लिए आम आदमियों को सुविधा दिलाना भी हमारे उद्देश्य में शामिल है।

अखिल बंसल : फाउण्डेशन की धार्मिक गतिविधियां क्या हैं ?

सरिता जैन : हमारी धार्मिक गतिविधियों में मंदिरों एवं तीर्थों का जीर्णोद्धार करना उनमें नियमित पूजन व्यवस्था तथा मंदिरों के पुजारियों को नियमित रूप से आर्थिक सहायता एवं वस्त्र प्रदान करना शामिल है।

अखिल बंसल : परिवेश का विकास किसप्रकार किया जा रहा है ?

सरिता जैन : शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से अरिहंतगिरि क्षेत्र के आसपास के सभी गांव में सामान्य विकास की गति बढ़ाने हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए तिरुमलै गांव के दस बच्चों तथा अलाम्यून्दी गांव के 5 बच्चों को छात्रवृत्ति दी जा रही है इसके अतिरिक्त श्री अकलंक ट्रस्ट द्वारा युवक फाउण्डेशन के माध्यम से प्रतिवर्ष 30 से अधिक छात्रों को स्कालरशिप देने की व्यवस्था की गई है।

अखिल बंसल : बच्चों के लिए और क्या कुछ योजनाएं हैं ?

सरिता जैन : हमने दोनों गांव के प्रधानों से बातचीत कर खेलकूद के लिए सुन्दर पार्क बनाने की योजना बनाई है, जिस पर कार्य चल रहा है। इसके साथ दोनों गांव के बच्चों व बच्चियों के लिए कोर्स की कॉपी व किताबें उपलब्ध कराई जाती हैं। हर हाथ को काम दिलाने के उद्देश्य से छोटी अवधि के व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए हैं।

अखिल बंसल : अन्य गतिविधियां क्या हैं ?

सरिता जैन : अनुसूचित जनजाति के विकास की योजनाओं में आर्थिक मदद के साथ व्यक्तित्व निर्माण योजना तथा पुरातत्व संरक्षण में सक्रिय योगदान देना। यहां की विरासत से परिचित कराने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों में योगदान जैसे संवाद–11 का आयोजन भी इसी का अंग है। गांव में स्ट्रीट लाइट तथा सोलर लैम्प उपलब्ध कराए जा रहे हैं। 125 मंदिरों में स्वयं के खर्च से पुजारी उपलब्ध कराए गए हैं।

एक मुलाकात फ्रेन्च लाइब्रेरी पांडिचेरी से

☐ श्रीमती अनुपमा आर. जैन 'महावीर', सनावद (म.प्र.)

समुद्र का सुहाना तट, लहरों से भरा समुद्र और एक लाख पुस्तकों व 8400 ताडपत्रिय पांडुलिपियों के संग्रह से भरी यही साहित्य की समुद्रनुमा लाइब्रेरी जहाँ पुस्तकों का संग्रह हिलोरें मार रहा है, वहाँ संवाद–11 की टीम मुलाकात कर रही है फ्रेन्च लाइब्रेरी से।

श्री हुकमीचंदजी ठोलिया के नेतृत्व में श्रीमती आकांक्षा डोसी चन्दनबाला जैन, रिंकू जैन द्वारा समागत अतिथियों का शॉल, माला, तिलक से भावभीना सम्मान उपरांत श्री ठोलिया ने जो बताया वह रोंगटे खड़े करने वाला है। जैन ग्रन्थों की छह माह तक होली जलाई और सैकड़ों साधुओं की घानी में पेलकर हत्या की।

किसी समय जैन संस्कृति पर हुए हमले में क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि हमारे दिगम्बर साधुओं को तेल निकालने वाली घानी में पेल दिया गया जैसा क्रूरतम अपराध किया गया है। हमारे इतने सारे मूलग्रन्थों की पांडुलिपियाँ जला दी गई। जिनसे छह माह तक होली जलती रही, हमारे पूर्वज श्रावकों को भालों पर कीलित कर मार डाला गया और न जाने क्या– क्या? हम सोच भी नहीं सकते ऐसे अत्याचार इस श्रमण संस्कृति के विलोपन के लिए किए गए हैं। इन सारी बातों के प्रमाण हैं कृपया अपनी संस्कृति के दर्शन करने तमिलनाडु अवश्य जाइये व महसूस कीजिए कि हमारे पूर्वजों ने श्रमण संस्कृति को बचाने के लिए कितना बलिदान दिया है, बच्चों को उनकी गौरव गाथाओं से अवगत कराने का कार्य कीजिये। उक्त लाइब्रेरी की स्थापना 1956 में फ्रेन्च सरकार ने की है। यहाँ एक लाख पुस्तकें, 8400 तमिल व जैन पुराणों की पाण्डुलिपियाँ सवा लाख फोटो कलेक्शन, 700 फोटो जैन मन्दिरों के; ये फोटो प्रदर्शित नहीं है रिकॉर्ड है।

जैन जगत के 400 से अधिक स्थानों पर जाकर यहाँ के जांबाज फोटोग्राफर व सर्वे करने वाली टीम ने अपनी जान हथेली पर रखकर जो कार्य किया है उसका परिणाम कुछ ही दिनों में कम्प्यूटर पर उपलब्ध होगा। पर क्लिक करते ही सारे फोटोग्राफ व जानकारी सम्पूर्ण विश्व को मिलेगी। सी.डी. डी.वी.डी. भी उपलब्ध होगी। जब भी पांडिचेरी जाएं तो साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे फ्रेन्च लाइब्रेरी के कर्मचारी शोधार्थी डॉ. लक्ष्मी नरसिम्हा, मि. वेंकटेश जो सेवानिवृत्त शिक्षक है तमिलनाडु के शिलालेखों में जैन जगत की जानकारी लिख रहे हैं। डॉ. देवी प्रसाद मिश्रा ताडपत्र पढने में शोध कर रहे हैं, फोटोग्राफर जिसने अपनी जान कई बार जोखिम में डाली श्री रमेश आदि का उत्साहवर्धन करें।

कैसी–कैसी विपरीत स्थितियों में जिनागम को कैसे सुरक्षित रखा जो आज हमें सुलभ हो रहा है ऐसी त्याग की भूमि तमिलनाडु को प्रणाम है।

कार्यक्रम समन्वयक प्रो. नलिन के शास्त्रीजी ने तुरन्त अंग्रेजी को हिन्दी रूपान्तरण कर जन समुदाय को अपनी सीधी सरल सुलझी हुई भाषा में बताया वहीं श्री हुकमीचंदजी ने पांडिचेरी समाज के सहयोग से कार्यों की जानकारी दी उससे लगा कि यहाँ आना और संवाद–11 की सार्थकता सिद्ध हो गई।

बहुत सा कार्य हो चुका है बहुत बाकी है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री आर.के. जैन सा. भी रूचि दिखा रहे हैं। संभावना है आने वाले समय में जैन जगत को बहुत कुछ मिलने वाला है हम एक क्लिक पर सम्पूर्ण 400 तीर्थों व साहित्य का दर्शन कर पायेंगे।

(संगठन की...., पृष्ठ २० का शेष)

संगठन में जोड़ें और उनकी स्थिति का अवलोकन करते हुए उन्हें शासन और सामाजिक दोनों स्तरों पर विज्ञापनादिक के रूप में अधिकाधिक आर्थिक सहयोग जुटाने में प्रभावी भूमिका निभायें, क्योंकि इस महँगाई के युग में यदि उन्हें आर्थिक सहयोग न मिले तो वे सिसकती नजर आयेंगी और एक न एक दिन कालकवलित भी हो जायेंगी। इसके अतिरिक्त पत्र संबंधी उनकी जो समस्याएँ हों, उनका भी निराकरण करने में सहयोगी बनें।

हमारा संगठन इस बात पर भी चौकन्ना रहे कि संगठन से जुड़े पत्रकार संपादक बंधु पीत पत्रकारिता से जुड़े तो नहीं हैं, हमें इससे बचने का यथा संभव प्रयास करना चाहिए। यह जानकर प्रसन्नता होती है कि आज समाज को हमारे द्वारा जो कुछ परोसा जा रहा है, वह उत्तम है, किन्तु उसे सर्वोत्तम नहीं कहा जा सकता। हमें सर्वोत्तम की भूमिका निभानी होगी। जो कुछ भी हमारे द्वारा परोसा जाये उसे इस ढंग से परोसा जाये जिससे समाज में द्वन्द्व व द्वेष न पनपे। सकारात्मक ऊर्जा के साथ सकारात्मक रूप से, पक्ष से, व्यामोह से सर्वथा दूर, तथा किसी पर कीचड़ उछालने या निंदा की प्रवृत्ति से दूर रहते हुए निर्भीकतापूर्वक हम किसी चीज को समाज के सामने रखते हैं तो उसका असर अन्तस की गहराई तक होता है। इसलिये पत्रकार तथा संपादक बंधुओं से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनायें चाहे उन्हें अपने निजी स्वार्थों को होम ही क्यों न करना पड़े। ध्यातव्य है व्यावसायिकीकरण की अपेक्षा मिशनरी भाव से स्वस्थ व स्वच्छ पत्रकारिता समाज व देश को एकता व अखण्डता में बाँधे रख सकने में समर्थ व सक्षम होती है।

तो आयें, पत्र पत्रिकाएँ, जो समाज की आईना होती हैं, उनके संरक्षण व संवर्द्धन के लिये यह जो अ. भा. जैन पत्र संपादक संघ नामक संगठन स्थापित है, उसे हम मजबूती प्रदान करने में एक जुट होकर अपनी सकारात्मक भूमिका निभाते हुए चरैवेति-चरैवेति के सूत्र को थाम लें। ●

(जैनपत्र ...., पृष्ठ १० का शेष)

के धन या पदलोभ के झांसे में न आकर सिद्धान्तनिष्ठ रहते हुए चाटुकारिता का त्याग कर माध्यस्थ भाव से घटनाओं का संकलन कर प्ररूपित करना चाहिए।

वर्तमान पीढी में भी संस्कारों/आदर्शों का निर्माण करने में पत्रों की अहम् भूमिका होनी चाहिए। उनकी रुचि के अनुरूप मेटर प्रकाशित कर उन्हें इस ओर आकर्षित करें ताकि धर्म, अध्यात्म के प्रति उनके सकारात्मक कदम उठ सके।

अहिंसा के व्यापक प्रचार के साथ ही जीवन में उच्च आदर्शों की स्थापना हेतु सम्पादक/पत्रकार अपना दायित्व समझें। एक-दूसरे के प्रति सद्भावनाओं को जागृत करते हुए निर्लेप भावना से वस्तुस्थिति को समझते हुए अपना उत्तरदायित्व निभायें, यही भावना। ●

तीर्थाटन संवाद

जैन संस्कृति का प्रतिनिधि स्थल - श्री अरिहंतगिरि

राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

संवाद–11 में हम सभी का केन्द्र श्री अरिहंतगिरि तिरूमलै रहा, यहाँ हमारे आठ दिवसीय प्रवास में ऐसा लगा कि यहाँ का वातावरण अत्यन्त शान्त, निर्मल प्राकृतिक विशेषताओं से परिपूर्ण है, चिड़ियों की चहचहाहट और सूर्य रश्मियों की आभा आज भी यहाँ प्रकृति के करीब ले जाने को आतुर दिखाई देती है।

भगवान श्री नेमिनाथजी की अतिशयकारी प्रतिमा –

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण, उन्नत शिलाखण्डों के पर्वत के ऊपर शिखामणि नाथ के नाम से प्रसिद्ध श्री नेमिनाथ तीर्थंकर की 18 फीट उत्तुंग प्रतिमा अत्यन्त मनोहारी व अतिशय से परिपूर्ण है, श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पर्वत के सादृश्य यह पहाड़ आचार्य भद्रबाहु की याद दिलाता है। आ. भद्रबाहु के साथ 12 हजार दिगम्बर मुनियों ने इस धरा पर आकर तपश्चरण किया है। भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमाएँ व श्री वृषभसेन गणधर, आचार्य समन्तभद्र, श्री वरदत्त मुनिराज की चरण पादुकाएँ हैं। भगवान नेमिनाथजी के अभिषेक कर गंधोदक लेने से अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है, ऐसी मान्यता स्थानीय ग्रामवासियों व अन्य मतावलम्बियों में भी प्रचलित है और हो भी क्यों न जिनके चरण रज से व मुखावलोकन से भव रोग मिट सकते हैं तो शरीर के रोग तो मिटना ही है।

ग्रन्थों में वर्णित गुफाओं का साक्षात् दर्शन होता है –

यहाँ की विशाल प्राकृतिक गुफाएँ देखकर लगता है कि हम जिनकी कल्पना करते हैं, वे यहाँ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही है, जिनगिरि कन्दराओं की चर्चा हम केवल सुनते हैं, यहाँ आप देख सकते हैं। तभी तो अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु के साथ आए 12 हजार मुनिगणों में से 8 हजार मुनिराजों ने यहाँ की गुफाओं में रहकर ध्यान, अध्ययन किया है। इतना ही नहीं यह गुफा तीन मंजिला व शेडनुमा है, जहाँ गुफा के अन्दर ही पानी का प्राकृतिक स्रोत आज भी है, दीवारों व छतों पर जम्बूद्वीप, ढाईद्वीप, समवशरण आदि के चित्र बताते हैं कि यहाँ अध्ययन अध्यापन का बहुत बड़ा केन्द्र विकसित था, तभी तो आचार्य अकलंक स्वामी ने इस भूमि को अपनी साधना भूमि बनाकर अनेक विद्यार्थियों को गुरूकुल में शिक्षा प्रदान की है। गद्य चिन्तामणि के प्रणेता तार्किक सिंह महान आचार्य श्री वादिभसिंह ने यहाँ शरीर और आत्मा के भेद को जान समाधि धारण की है। इन गुफाओं के रहस्य व यहाँ की विशेषताओं को लिखा नहीं जा सकता, क्योंकि यहाँ महसूस किया जा सकता है, उस अहसास को जिसे तथाकथित लोग काल्पनिक कह देते हैं। तमिलनाडु की प्रणम्य भूमि को नमन करने प्रत्येक समाजजन को यहाँ अवश्य आना चाहिये व अपनी संस्कृति के दर्शन करना चाहिये।

प्राचीन मंदिर देता है प्रेरणा–

गुफाओं के समीप ही भगवान नेमिनाथजी का प्राचीन मंदिर है। पहाड़ के ऊपर खड्गासन श्री नेमिनाथजी हैं तो पहाड़ के नीचे पद्मासन नेमिनाथ व अन्य कई प्रतिमाएँ बताती हैं कि अनेकों वर्षों से वे यह सन्देश दे रही है कि दिगम्बरत्व ही मुक्ति का मार्ग है

और वे मुक्तिमार्ग के प्रतिनिधि हैं।

1200 वर्ष से अधिक प्राचीन शिलालेख है –

वैसे तो यह तीर्थ हजारों वर्ष प्राचीन होगा, फिर भी यहाँ 1200 वर्ष प्राचीन शिलालेखों में राजराज देव की बहन द्वारा बैगई तालाब निर्माण, राजेन्द्र चोलदेव के शासन में जिनालय निर्माण, कुमार वर्मन त्रिभुवन चक्रवर्ती, वीर पांड्यदेव, स्वामी अंबल पेरूमलया शिनतरैया, राजनारायण संतुवर राजा, वीर कंबन ओडईय के पोते कंबन ओडई, पुत्र ओम्मन ओडई, विष्णु कंदली नायक, आचार्य परवादिमल्ल के शिष्य कडककोन्नूर, आचार्य अरिष्टनेमि, त्रिभुवन चक्रवर्ती राजराजदेव, राजगंभीर संपुराजयन अट्टी, मल्लानव संबकुल पेरूमल उपाधिधारी, राजगंभीर नल्लूर ग्राम ईरालपेरूमन के पुत्र अंदरालु पेंगल, चीर वंशी व्याम्रक्त श्रवणोज्वलन, सुनर सोलन राजराजन, द्वितीय राजेन्द्रन, तृतीय राजेन्द्रन, शंभुराय, राष्ट्रकूट, गंगा सेतिराज, पांडिराज, विजयनगर के राजाओं आदि के शिलालेख मिलते हैं।

अत्यन्त प्राचीन रमणीक तीर्थ में प्राचीनता के साथ नये रूप विकास का क्रम भट्टारक श्री धवलकीर्तिजी के नेतृत्व में जारी है। विशाल पंचदेवी मंदिर बन गया है। अतिथिगृह, आचार्य श्री अकलंक विद्यापीठ गुरूकुल, सरिता महेन्द्र जैन विद्यालय, गर्ल्स हॉस्टल आदि तेजी से विकसित हो रहे हैं। प्राचीन विरासत को सम्हालने व नई पीढी को संस्कारित करने में लगे श्री धवलकीर्ति भट्टारकजी को सहयोग करना प्रत्येक समाजजन का कर्तव्य है।

गीत

हम यही कामना करते हैं, कामना करते हैं कि
ऐसा आने वाला कल हो
इन तमिलनाडु के तीर्थों का, पूरा भारत वन्दन कर ले, हम यही कामना...
अरिहन्तगिरि की धरती का, हर कण हर पत्थर पावन है।
सरिता-महेन्द्र की भक्ति से, इस पोष में बरसा सावन है,
इस पुण्य भूमि का मान बढे, भट्टारकजी का वन्दन हो।। हम यही कामना...
भारत की तीर्थ कमिटी ने आर. के. सा नेता पाया है,
इन्होंने अपनी मेहनत से, यहाँ तीर्थ विकास कराया है।
सभी पत्रकार-विद्वानों को, यहाँ तीरथ दरश कराया है,
संवाद 11 को सेतु, उत्तर-दक्षिण का बनाया है,
हमने जाना, वो बतलाये, संवाद को सफल बनाना है।। हम यही कामना...
धवल कीर्तिजी स्वामी ने इस तीर्थ का उद्धार किया
देव-गुरु और शास्त्र के संग, शिक्षा का भी है प्रसार किया
यह तमिलनाडु का केन्द्र बने, आगे पथ इसका उज्ज्वल हो। ।हम यही कामना...
हम जितने लोग यहाँ आये, हमको कर्तव्य निभाना है
इस तमिलनाडु के वैभव को, पूरे जग को बतलाना है
इन्होंने फर्ज निभाया है, हमको ये कर्ज चुकाना है।। हम यही कामना...

दिनेश दगड़ा, सम्पादक - जैन जनवाणी, कोलकाता

पाठक संवाद

अलीगढ से डॉ. राजीव प्रचण्डिया (सम्पादक- जयकल्याणश्री) लिखते हैं –

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की ओर से प्रकाशित धार्मिक कुरीतियों व अंधविश्वासों पर बेबाक टिप्पणी करने वाले वरिष्ठ जैन पत्रकार श्री अखिल जैन बंसल के प्रधान सम्पादकत्व में बावन पृष्ठीय 'जैन संवाद' का प्रथम अंक विविध सामग्री के साथ अपना वैशिष्ट्य लिए हुए है जिसमें जैन मनीषा जगत के विश्रुत विद्वान – लेखकों की लेखनी से निःसृत विचार पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करेंगे कि यथार्थतः जैन पत्रकारिता एक प्रकार से फूलों की नहीं, शूलों की सेज है; व्यापार या व्यवसाय नहीं, एक मिशन है।

पत्र का नाम 'जैन संवाद' वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सटीक एवं प्रासंगिक है। इस सुन्दर व अभिनव प्रस्तुति के लिए बधाई। 'जैन संवाद' प्रगतिपथ पर सतत आरूढ रहता हुआ जिज्ञासुओं की प्यास को बुझाने में सफल रहे, इस मंगल भावना के साथ।

लखनऊ से डॉ. शशिकान्त जैन लिखते हैं : जैन संवाद का प्रथम अंक मिला। जैन पत्र सम्पादक संघ की स्थापना के संबंध में आपका लेख, विषय वस्तु पर सम्यक् प्रकाश डालता है। पत्रकारिता को यदि साधु सम्प्रदाय से अलग रखा जाए तभी अनेकान्तिक सोच और चिन्तन संभव हो सकेगा।

सरधना उ.प्र. से पं. सरमनलाल दिवाकर लिखते हैं : भारतीय जैन समाज में अब तक इसप्रकार का पत्र नहीं था जो पत्रकारिता के स्वरूप को दर्शाता। आपने हमेशा से चली आ रही कमी को पूरा किया है जैन संवाद के नाम से मुख पत्र के रूप में। इस पत्र के माध्यम से जैन समाज को जाग्रत करते रहें।

ललितपुर से सुनील जैन संचय लिखते हैं : अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का मुखपत्र 'जैन संवाद' का प्रथम अंक प्राप्त हुआ। आद्योपान्त पढ़कर ही छोड़ पाया हूं। आपके कुशल सम्पादकत्व में प्रकाशित यह प्रथम अंक मनोरम, पठनीय व संग्रहणीय है। निश्चित ही उक्त पत्र के प्रकाशन से एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति होती नजर आ रही है।

जैन पत्र सम्पादक संघ की सक्रियता देखकर महसूस हो रहा है कि जैन पत्रकारिता के अच्छे दिन आने वाले हैं। अब तक जो भी अधिवेशन हुए उनकी अपार सफलता व पत्रकारिता से जुड़े महानुभावों की जागरूकता बता रही है कि जैन पत्रकारिता का आने वाला भविष्य सुन्दर बन सकता है। मुझे पूर्ण आशा व विश्वास है कि जिस जोश व जज्बे के साथ यह संगठन आगे बढ़ रहा है वह बरकरार रहेगा और पूरी निष्ठा व ईमानदारी पूर्वक जैन पत्रकारिता को दिशा बोध देगा। अध्यक्ष व महामंत्री दोनों महानुभाव पत्रकारिता से भलीभांति सुपरिचित हैं। ऐसे हाथों में संघ की कमान होना प्रगति की गारंटी तो देता ही है।

संघ के माध्यम से एक मंच हमारे जैन पत्रकारों को मिलेगा, जिससे वह

अपनी बात रख सकेंगे। पत्रकारों के ऊपर बहुत बड़ी सामाजिक जिमेदारी होती है उन्हें अपनी कलम चलाने से पूर्व तथ्यों का अन्वेषण करना आवश्यक है। संघ से हम अपेक्षा करते हैं कि जैन पत्रकारों के लिए एक आचार संहिता का निर्धारण भी हो, जिस पर नियंत्रण संघ का हो।

आज मीडिया का युग है। पत्रकारिता के महत्व को देखते हुए इसे चौथा स्तम्भ माना जाता है। ऐसे में जैन पत्रकारों को अपनी जिम्मेदारी समझना होगी। स्वस्थ पत्रकारिता के लिए अभी बहुत कुछ परिवर्तन बाकी है। संघ के माध्यम से नए युग की शुरूआत तो हुई है जो स्वागत योग्य है, पर यह उत्साह बना रहना चाहिए।

पत्रकारिता के माध्यम से समाज में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया जा सकता है। जैन पत्र सम्पादक संघ पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वह सामाजिक क्रांति का सूत्रपात करे। प्रसन्नता है कि इतने कम समय में संघ ने दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर एक नई ऊर्जा के साथ दिशाबोध देने का काम किया है, हमारी शुभकामनाएं साथ हैं, और आशा करते हैं कि हम सब मिलकर इसको एक नई ऊंचाई तक ले जाएंगे। जैन पत्र सम्पादक संघ एक नया सबेरा लाएगा और हम सभी उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर नई क्रांति का सूत्रपात करेंगे।

(संवाद ११ और ...., पृष्ठ २३ का शेष)

तथा जैन मन्दिर में स्वर्णिम रथ भी देखे। पत्रकार-सम्पादकों की बस में तमिलनाडु तीर्थों की उद्धारिका श्रीमती सरिता महेन्द्र जैन ने सम्मिलित होकर पत्रकार वार्ता में अनेक प्रश्नों के उत्तर के साथ पत्रकार सम्पादकों से समाचार पत्रों में उत्तर भारतवासियों को दक्षिण भारत में जैन पुरातत्व व संस्कृति की समृद्ध परम्परा से अवगत कराने एवं तीर्थ यात्रा के लिए प्रेरणा की आवश्यकता बताई। दिगम्बर जैन समाज को इन तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन में सहयोग देना चाहिए। नेमिगिरि पर्वत पर भ.नेमिनाथ के अभिषेक के साथ हमारी यह यात्रा सानन्द सम्पन्न हुई।

इस तमिलनाडु जैन तीर्थयात्रा के कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक प्रो. नलिन के. शास्त्री, उप संयोजक श्री अनूपचन्द जैन और पत्र सम्पादक संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल साधुवाद के पात्र हैं।

महावीर जयन्ती पर विज्ञापन जारी करने की मांग

जयपुर/अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अखिल बंसल ने विभिन्न प्रान्तों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर भगवान महावीर की जन्म जयन्ती पर पंजाब सरकार की भांति प्रतिवर्ष समाचार पत्रों को विज्ञापन जारी करने की मांग की है।

स्मरण रहे कि विगत दो वर्षों से पंजाब सरकार के जनसंपर्क विभाग द्वारा भगवान महावीर की जन्म जयंती पर विज्ञापन जारी किया जाता है।

स्वागत है नये सदस्यों का

ABJPS/ D/L-82
प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'
निदेशक बी. एल. इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, जैन मंदिर परिसर
20वां किमी, जी.टी. करनाल रोड़
पो. अलीपुर दिल्ली – 110036
फोन : 011–27206630
मो.: 09450179254

ABJPS/ D/L-83
डॉ. अनेकान्त जैन
सह सम्पादक – तीर्थंकर वाणी
ए–93/7ए जिन फाउण्डेशन
नन्दा हास्पिटल के पीछे
छत्तरपुर एक्सटेंशन
नई दिल्ली – 110074
मो. 09868034740

ABJPS/ D/L-84
श्री प्रदीप जैन
सम्पादक – जैन प्रचारक
ए–115, जोशी कॉलोनी
तीसरा माला, आई. पी. एक्सटेंशन
पटपड़गंज, दिल्ली – 110092
मो. 09811469228

ABJPS/ MP/L-85
श्री पवन जैन शास्त्री 'दीवान'
सम्पादक – श्री श्री सत्यबोध
महावीर भवन, स्वामी स्कूल के पास
पीपल वाली माता, दत्त पुरा
मुरैना (म.प्र.)
मो. 09425364534

ABJPS/ MP/L-86
डॉ. सुशीला सालगिया
सह सम्पादक – सन्मति वाणी
16/1, साउथ तुकोगंज,
समवसरण जैन मंदिर के पीछे,
इन्दौर (म.प्र.)
मो. 09425345602

ABJPS/ MP/L-87
पं. विनोदकुमार जैन
सह सम्पादक – संस्कार सागर
मु. पो. – रजवास
जिला–सागर (म.प्र.)
मो. 09406518971

ABJPS/ MP/L-88
पं. सनतकुमार जैन
मु. पो. – रजवांस
जिला – सागर (म.प्र.)
09754579271

ABJPS/ RJ/L-89
डॉ. मधु एस. जैन
सम्पादक – शुचि (मासिक)
मीना नर्सिंग होम के पास, रानी बाजार, बीकानेर (राज.)
मो. 9460025131

ABJPS/ RJ/L-90
श्री महेन्द्रकुमार जैन
सम्पादक – दिगम्बर जैन ज्योति
1126 महावीर पार्क
जयपुर – 302003

अस्थायी से स्थायी बने सदस्य

ABJPS/ UP/L-11
पं. सरमन लाल दिवाकर
दिवाकर सदन, जैन मंदिर के पास,
आदर्श नगर, सरधना, मेरठ (उ.प्र.)

ABJPS/ RJ/L-21
डॉ. प्रेमचंद रांवका
22, श्रीजीनगर, दुर्गापुरा, जयपुर

समाचार संवाद

जैन पत्रकारों की कार्यशाला जयपुर में

जयपुर/अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के तत्वावधान में 17 व 18 मार्च को जैन पत्रकारों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला डॉ. संजीव भानावत के नेतृत्व में आयोजित की गई है। यह राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली जैन पत्रकारों के लिए पहली कार्यशाला होगी। कार्यशाला का उद्घाटन भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर. के. जैन मुम्बई करेंगे। इस अवसर पर सम्मेदशिखर वर्ष मनाने हेतु कार्यक्रम तय करने के लिए भी आवश्यक मीटिंग रखी गई है। भाग लेने वाले पत्रकार महामंत्री अखिल बंसल से 07737241003 पर सम्पर्क कर अपने नाम रजिस्टर्ड करालें।

तीर्थाटन के साथ संवाद–11 सम्पन्न

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में 25 दिसम्बर से 1 जनवरी 12 तक तमिलनाडु की तीर्थयात्रा के साथ संवाद–11 की पूर्णाहुति हुई। शास्त्री परिषद्, विद्वत्परिषद् तथा ऋषभदेव विद्वत् महासंघ के समागत विद्वानों व अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के वरिष्ठ पत्रकारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कार्यक्रम को सफल बनाया। चैन्नई की श्रीमती सरिताजी व एम.के. जैन इस कार्यक्रम के केन्द्र बिन्दु रहे जिन्होंने अपनी टीम के साथ दिन–रात मेहनत कर मेहमानों की आवभगत में कोई कसर नहीं रखी। चेन्नई में 25 दिसम्बर को सभी आगन्तुक एकत्र हो गए थे जहां से भोजनोपरान्त लक्जरी बसों से सभी लगभग 142 विद्वान व पत्रकारों ने अर्हत्सुगिरि के लिए प्रस्थान किया। श्रीक्षेत्र अर्हत्सुगिरि पर पू. भट्टारक धवलकीर्तिजी विराजमान थे और सभी व्यवस्थाओं के मुख्य सूत्रधार बन देखरेख कर रहे थे। सायंकालीन भोजन के पश्चात् उद्घाटन सत्र हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. ज्योति जैन के मंगलाचरण व पं. पवन दीवान के काव्य वाचन से हुआ। स्वागत भाषण श्री एम. के. जैन व सरिता जैन ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री आर. के. जैन ने अपने अब तक के कार्यकाल की उपलब्धियों पर विस्तृत प्रकाश डाला। भट्टारक श्री धवलकीर्तिजी ने अपने आशीर्वचन में क्षेत्र की जानकारी दी और सभी आगंतुकों को आशीर्वाद प्रदान किया। 26 दिसम्बर से यात्रा का श्रीगणेश हुआ। करुन्दई, तिरुपरम्वोर, तिरुपतिकुण्डरम्, आरपाक्म, मागरल, सालुक्कई, पौन्नूरमलै, केसातमंगलं, वैनकुण्डरम्, जिंजी, मिलाचित्तामूर, आलाग्राम, पैरामण्डूर, बेडकम, बडली, उपबेलू तथा पाण्डिचेरी के जिनालयों की वंदना कर सभी आत्मविभोर हो गए। स्वर्ण मंदिर की अनुपम छटा भी देखने को मिली। 31 दिसम्बर को पूर्व सांसद श्री सी. कृष्णन के मुख्य आतिथ्य में समारोह का समापन हुआ जिसमें समागत विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। पत्रकारों ने श्रीमती सरिता जैन व एम.के. जैन से प्रश्नोत्तर शैली में सीधी बात की। अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की भी बैठक हुई। ●

तमिलनाडु संवाद-11 पथ के पथिक

समन्वय वाणी के सम्पादक अखिल बंसल पारसदास अनिलकुमार जैन
अहिंसा इंटरनेशनल पत्रकारिता पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ, जयपुर
के लिए संपादक अखिल बंसल द्वारा प्रिन्टोमैटिक्स, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।